युक्रैन का शिक्षा मंत्रालय
तरास शेव्चेंको कीव राष्ट्रीय विश्वविध्यालय

लेस्या उक्राईंका

वन-गीत

उक्राइनी से अनुवाद

УДК
ББК
К

लेस्या उक्राईंका

वन-गीत। उक्राइनी से अनुवाद -

कीव : «कीव विश्वविध्यालय» प्रकाशन केंद्र, 2016 -

143 प., 8 चित्र.

© यूरी बोत्वींकिन, 2016, अनुवाद।

© अनामिका भारती, 2016, संपादन।

© इज़ाबेल्ला स्तस्यूक, 2016, चित्रांकन।

युक्रैन में भारत के दूतावास के सहारे प्रकाशित है।

युक्रैन की महान कवियत्रि लेस्या उक्राईंका

लेस्या उक्राईंका (लरीसा कोसच) का जन्म 25 फ़रवरी 1871 को युक्रैन के उत्तर-पश्चिमी शहर नोवोग्राद-वोलींस्किय में हुआ था। उस समय युक्रैन रूस साम्राज्य का एक भाग था। लेस्या की माँ ओलेना प्चील्का लेखिका और पिता पेत्रो कोसच वकील थे। नौ साल की आयु से उन्हों ने कविताएँ लिखनी शुरू की और तेरह साल की आयु में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगी थीं। तभी उनका साहित्यिक उपनाम पैदा हुआ, लेस्या उक्राईंका (लेस्या - घर का उपनाम, उक्राईंका - युक्रैन की स्त्री)।

कवियत्रि का बचपन वोलीन (युक्रैन का उत्तर-पश्चिमी भाग) में बीता। वहाँ के कोमल व रहस्यपूर्ण प्रकृति, लोक-संस्कृति तथा मिथकों ने उन पर गहरा प्रभाव डाला जो हमें उनके जीवन के अंत में रचे हुए “वन-गीत” में स्पष्ट दिखाई देता है।

लेस्या के रचना-कार्य में एक अतुल भूमिका लोक-कला की रही है। युक्रैन के अलग-अलग क्षेत्रों में रहकर उन्हों ने वहाँ के लोक गीत व कथाएँ एकत्र किए और कई पत्रिकाओं में छपवाए।

प्रकृति और आम लोगों से इतना करीब रहने का एक अंजाम सन् 1911 में लिखा लेस्या का सब से रहस्यवादी नाटक “वन-गीत” हुआ। इस रचना की सृष्टि जोर्जिया में हुई जहाँ उस समय कवियत्रि का इलाज चल रहा था। वहीं 1 अगस्त को सन् 1913 में उनका देहांत हुआ।

इस रचना में हमारे सामने सुंदर प्रकृति की पृष्ठभूमि पर मानवों तथा परलोक के प्राणियों के पात्रों के द्वारा मानवीय भावनाओं की अमर लीला प्रस्तुत की गई है।

यूरी बोत्वींकिन

वन-गीत

तीन अंकों का रहस्यमय नाटक

वन-गीत के पात्रों की सूची:

भूमिका

बांध तोड़नेवाला (वसंत की बाढ़ का देवता)

पोतेर्चाता (डुबाए अवैध बच्चों की आत्माएँ (दो))

जलपरी

जलराज

अंक 1

लेव मामा

लूकाश

जलपरी

वनराज

मावका (वनपरी)

पेरेलेस्निक (लुभानेवाला)

मृत्यु की छाया (नहीं बोलती)

पोतेर्चाता

कुत्स (दलदल में रहनेवाला पिशाच)

अंक 2

लूकाश की माँ

लूकाश

लेव मामा

मावका

खेतपरी

किलीना

जलपरी

चट्टान में रहनेवाला (मृत्यु)

पेरेलेस्निक

अंक 3

मावका

वनराज

कुत्स

ज़्लीद्नि (दरिद्रता के भूत)

लूकाश की माँ

किलीना

बच्चा

लूकाश

किलीना के बच्चे (नहीं बोलते)

भाग्य

पेरेलेस्निक

भूमिका

वोलीन[1] का पुराना सा तथा घना सा निर्जन वन। वन के मध्य में एक काफ़ी बड़ा खुला मैदान है जिस में एक बर्च का पेड़ तथा एक विशाल पुराना सा बांज का पेड़ उगे हैं। मैदान के एक किनारे सरपत के झाड़ शुरू होते हैं और पास में ही हलके हरे रंग का दलदल दिख रहा है। यह जंगली झील का तट है जो एक जंगली झरने के सहारे बनी है। यह झरना वन से निकलकर झील में मिल जाता है और झील की दूसरी ओर से निकलकर वन में गुम हो जाता है। झील शांत है, हरियाली तथा कुमुदिनियों से ढंकी है मगर मध्य में साफ़। यह स्थान बिल्कुल वीरान, रहस्यपूर्ण है परंतु उदास नहीं लगता - पोलीस्स्या[2] के कोमल तथा स्वप्नपूर्ण सौंदर्य से भरा है।

वसंत का आरंभ। पेड़ों के नीचे तथा मैदान पर पहली हरी घास उगी है और वसंत के पहले फूल खिले हैं। पेड़ों पर पत्ते अभी नहीं निकले हैं पर हरी कलियाँ लगी हैं जो जल्द ही खिलनेवाली हैं। झील पर कोहरा कभी शांत फैला रहता है, कभी पवन से हिलता है तो कभी टुकड़े-टुकड़े हो जाता है जिस से हलके नीले रंग के जल का दर्शन हो पाता है। वन में से किसी कोलाहल का स्वर आया, झरना झूम उठा और उसके जल के साथ-साथ वन से "बांध तोड़नेवाला" दौड़ आया - युवन, सुनहरे बालोंवाला, नीली आँखोंवाला, उसकी गति जोश से भरी होने के बावजूद मृदु है। उसके वस्त्रों के रंग खेल रहे हैं - गहरे पीले से लेकर गहरे नीले तक - और तीव्र सुनहरी चिंगारियों से चमक रहे हैं। झरने से झील में लपककर वह मंडराने लगता है सोये हुए जल को जगाते हुए; कोहरा छंट जाता है, जल का नीला रंग गहरा हो जाता है।

बांध तोड़नेवाला

---

[1] युक्रैन का उत्तर-पश्चिमी वनीय क्षेत्र (यहाँ और आगे की टिप्पणियाँ अनुवादक की हैं)

[2] युक्रैन का उत्तरी वनीय क्षेत्र.

पहाड़ों से घाटी में
दौड़ता, कूदता, लपकता हूँ,
पुल सभी मैं तोड़ता हूँ,
बांध भी तोड़कर छोड़ता हूँ,
और सब लट्ठों की सड़कें
लोगों की बनाई।
युवन मुक्ति के प्रकार
है वसंत का जल!

(जल को और उछालता है, डुबकी लगाकर वापस निकलता है मानो जल में कुछ ढूँढ रहा हो)

पोतेर्चाता

(सफ़ेद कमीज़ें पहने दो छोटे पीले रंग के बच्चे कुमुदिनियों में से निकलते हैं)

पहला
भटककर इधर आये क्यों?

दूसरा
नींद से हमें जगाया क्यों?

पहला
माँ ने हमें सुलाया था,
नरम बिस्तर बनाया था
दलदल के पत्थरों पर,
कुमुदिनियों से ढांका था
और धीमी सी आवाज़ में
लोरी हमें सुनाई थी:

“लूली लूली लुल्याता[3]
सो जाओ बच्चो मेरे!”

दूसरा
इधर क्यों आये घूमकर?

पहला
जाना है किस से मिलकर?

बांध तोड़नेवाला
उस जलपरी से जिस से
बचपन से प्रेम किया है।
इस जल की राजकुमारी
है विश्व की सर्वश्रेष्ठ नारी!
पर्वत मैं घूमकर आया हूँ,
हर घाटी, हर दर्रा -
कहीं मिली न प्रिया ऐसी
इस झील की माल्किन जैसी।
घंघोलूंगा यह पानी,
मिलेगी मेरी रानी!
(जोश में जल घंघोलता है)

पोतेर्चाता
ओ माँ! जल न घंघोलो!
हमारा घर न तोड़ो!

---

[3] एक लोकप्रिय युक्रैनी लोरी की प्रथम पंक्ति.

छोटी सी है गुफ़ा हमारी
मम्मी ने जो बनाई,
है अपना घर गरीब,
पिता न है करीब...
(अनुरोध करते हुए उसके हाथ पकड़ते हैं)
हम जाएंगे झील के तले तक
जहाँ ठंडा अंधेरा फैला है,
डूबा हुआ मछेरा लेटा है,
उसी पर जलपरी है बैठी...

बांध तोड़नेवाला
कहो कि उसको छोड़ दे
और मेरे पास आ जाए!
(पोतेर्चाता झील में डुबकी लगाते हैं)
ऊपर आ जा प्रिया!

जलपरी ऊपर तैर आती है और सुखपूर्वक हाथ जोड़ते हुए लोभनीयता से मुस्कुराती है। उसके सिर पर दो सेहरे हैं, एक बड़ा और हरियाली का बना, दूसरा मोतियों का, छोटा, मुकुट जैसा जिस के नीचे से पारदर्शी मुखपट उतरता है।

जलपरी
अरे! मेरे जादूगर, तुम?!

बांध तोड़नेवाला
(क्रोध से)
क्या कर रही थी?

जलपरी

(उसकी ओर लपक जाती है परंतु उसके पास से तैरकर आगे चली जाती है)

मैं देखती रही रात भर
तुम्हारे स्वप्न, स्वामि!
कितने बहाए आँसू मैं ने
और इकट्ठे किए चांदी के प्यालों में,
तुम्हारी मृदु बातों के बिना
वे पूरे भर गए...

(ताली बजाकर तथा बाहें खोलकर फिर से उसकी ओर लपक जाती है और फिर से उसके पास ही से निकल जाती है)

सिक्का एक डालकर देखो -
उठेगी उनकी बाढ़!
(ज़ोर से हँसती है)

बांध तोड़नेवाला
(व्यंग से)
क्या इस दलदल में भी
प्यार पालते हैं सिक्कों से?

जलपरी उसके निकट आती है पर वह झटके से दूसरी ओर मुंह फेर लेकर पानी का तूफ़ान उठाता है।

जा बैठ उस मछुए पर -
यह जलपरी का धर्म है!
केकड़ों व मछलियों से
तू कर उसकी रक्षा,
न खाए उसे कोई...
और प्यार से कर ले बात!

जलपरी

(तैरकर पास आकर और उसके हाथ थामकर उसकी आँखों में देखती है)

इतनी जल्दी क्रोध आया?
(चतुरता से)
एक बात है मेरी जान,
जो मुझको है पता!

(धीमे से हँसती है, वह घबराने लगता है)

इतनी देर तुम को क्यों लगी?
उस चक्कीवाले की कन्या को
तुम ने पसंद किया
फिर जल की राजकुमारी
तुम्हारे दिल में न रही!
शिशिर की लंबी रातें,
कन्या की सुंदर आँखें...
तभी तो इतने ठाकुर
उस के लिए अभूषण लेकर आते!

(उंगली के संकेत से उस को डांटते हुए हँसती है)

अच्छी तरह पता है
तुम्हारा यह स्वभाव,
पर मैं क्षमा करती हूँ,
मैं तुम से प्यार करती हूँ!
(विनोदपूर्ण उत्साह से)
एक पूरा लंबा पल रहूंगी
तुम्हारी वफ़ादार,
पूरे एक मिनट तक
रहूंगी मैं विनम्र व स्नेही
जल में डुबाकर विश्वासघात को!

इस जल पर एक पहर तक भी
कोई निशान रहेगा न
तुम्हारे धोखे और मेरे रुठने का!

बांध तोड़नेवाला

(झटके से दोनों हाथ उसकी ओर बढ़ाता है)

अच्छा है, बन गई है बात!
उठें तूफान के ऊपर!

जलपरी

(उसके हाथ पकड़कर तीव्रता से मंडराने लगती है)

तूफ़ान पर उछलकर,
पीले रेत पर चलकर,
मोतियों का सेहरा पहनकर
मैं नाचूंगी मस्ती में! अहाहा! अहा!

(पानी उछालते हुए मस्ती में चिल्लाते हैं। पानी तटों से टकराता है, सरपत हिलने लगते हैं और पक्षियों के झुंड ऊपर उड़ जाते हैं)

जलराज

(झील के मध्य में ऊपर निकलता है। वह सफेंद बालोंवाला बूढ़ा है, उसके बाल और सफेंद दाढ़ी कमर तक लंबे हैं, उन में कुछ दलदल के पौधे फंसे हैं। उसके कपड़े गाद के रंग के हैं, सिर पर सेहरा है। उसका स्वर धीमा किंतु भारी है।)

हमारे जल की शांति कौन भंग करता है?

जलपरी और उसका प्रेमी रुककर और एक दूसरे से हटकर भाग पड़ते हैं।

शर्म आनी चाहिए तुम्हें बच्ची!
जल की राजकुमारी नाच रही है
अजनबी के साथ! लज्जा की बात है!

जलपरी

पिता जी, अजनबी नहीं है यह।
तुम ने नहीं पहचाना? बांध तोड़नेवाला है यह तो!

जलराज

हाँ, पता है। जलवंश का है यह यध्यपि,
अपना नहीं है। चालाक, धोखेबाज़।
वसंत में यह मस्ती करता है, खेलता, तोड़ता है,
झील से उड़ाकर फेंकता है वह शांदार सेहरा
जो साल भर में जलपरियाँ बटती हैं,
डरा फिर देता है शांत और चौकस पक्षियों को,
नम्रा के पेड़ की जड़ में धरती काटता,
बेचारे पोतेर्चाता, उन अनाथों के दीपों में
पानी तो ऐसे ही फेंक देता है,
फिर मेरे सीधे तट बरबाद करता है,
मेरा बुढ़ापा शांतिहीन बनाता है।
और गर्मियों में यह कहाँ रहता है?
कंजूसी से जब सूरज पानी पीता है
मेरे इस पात्र से प्यासे गिद्ध की भांति,
सरपत झुक जाता है जब प्यास से
सूखे तटों पर रहकर,
जब सूखे सिर झुकाती हैं गर्म जल तक
मरती हुई कुमुदिनियाँ?
तब यह कहाँ रहता है?

इस भाषण के दौरान बांध तोड़नेवाला चुपके से जलपरी को सिर से संकेत दे रहा है उस के साथ वन के झरने के द्वारा भाग जाने के लिए।

बांध तोड़नेवाला
(छुपी हुई मुस्कान से)
तब सागर में रहता हूँ दादा।
तब महासागर को होती है
मेरी सहायता की आवश्यकता,
ताकि उस के भी पात्रों को
सूरज न पी जाए।
सागर का राजा जब बुलाए
तो अवश्य बात माननी होती है,
यही होती है सेवा - तुम तो स्वयं जानते हो।

जलराज
हाँ, सागर में रहते हो तब...
और यदि शरद की बरसात,
मेरी पुरानी मित्र
मेरी सहायता नहीं करती
तो भाप के साथ मैं नष्ट हो जाता!
बांध तोड़नेवाला चुपके से जल के अंदर छुप जाता है।

जलपरी
भाप नष्ट नहीं होता है बापू!
उस से फिर जल बन जाता है।

जलराज
बड़ी तू होशियार है!
जा फटाफट नीचे! बहुत हुआ बक-बक!

जलपरी

जाती हूँ बापू! वह तो गया है अब यहाँ से।
बस उझली हरियाली में
थोड़ी कंघी कर लेती हूँ।

(कमर पर टांगी हुई सीपी की बनी कंघी लेकर तट पर उगी हरियाली संवारने लगती है)

जलराज

ठीक है, करो, मुझे खुद को अच्छा लगता है
जब सब सुव्यवस्था में हो।
मैं इधर ही कर लेता हूँ प्रतीक्षा,
कर लो आराम से पूरा।
कुमुदिनियाँ भी ठीक करो,
बराबर फैलती जाएँ,
और हरियाली की यह चादर जोड़ दो
जो उस आवारे ने गड़बड़ किया है।

जलपरी

ठीक है बापू।

जलराज जलपरी का काम देखते-देखते सरपत में आराम से लेट जाता है, धीरे-धीरे उसको नींद आ जाती है।

बांध तोड़नेवाला

(ऊपर निकलकर धीमे से जलपरी से)

छिप लो नम्रा के पेड़ के पीछे!

जलपरी जलराज को मुड़कर देखते हुए छिप जाती है।

चल मेरे साथ
जहाँ प्रबल प्रवाह है,

हम जल की तीव्र गति से
तोड़ेंगे बांध और डुबा देंगे
उस चक्कीवाले की कन्या को!

(जलपरी का हाथ पकड़कर उस के साथ तीव्रता से झील को पार करने लगता है। उस पार पहुंचने से थोड़ा पहले जलपरी चीखकर रुक जाती है)

जलपरी

हाय, मैं डूबे हुए बांज में फंस गई!

जलराज जाग जाता है, उनका रास्ता काटने के लिए लपक जाता है और जलपरी को पकड़ लेता है।

जलराज

अच्छा! ऐसा?! मक्कार कहीं का!
तेरे जलपरियों का होश उड़ाने की
करूंगा मैं शिकायत तेरी माँ से -
पहाड़ों की बर्फ़ीली आंधी से - वह देखेगी तुझे!

बांध तोड़नेवाला

(ज़ोर से हँसते हुए)

पर्याप्त मेरी मस्ती तब हो चुकेगी!
हे जलपरी, आँसू बहाती जाना!

(जंगली झरने में कूदकर अदृश्य हो जाता है)

जलराज

(जलपरी से)

तू नीचे जा और पूर्णिमा की
तीन रातों तक मत आना ऊपर!

जलपरी

(विरोध से)

कब से होने लगी जलपरियाँ
इस झील में दासियाँ? स्वतंत्र हूँ!
स्वतंत्र हूँ मैं जल की भांति!

जलराज

मेरे इस राज्य में जल भी
तटों तक ही सीमित रहता है।
जा नीचे!

जलपरी

नहीं!

जलराज

नहीं? फिर मेतियों का यह सेहरा दे देना इधर!

जलपरी

नहीं! सागर के राजकुमार का उपहार है यह।

जलराज

पहनने का अवसर अब नहीं मिलेगा।
मेरा आदेश न मानने के लिए
ले जाएगा तुझे "चट्टान में रहनेवाला"।

जलपरी

(आतंक से)

नहीं, प्रिय बापू जी! मैं मानूंगी आदेश!

जलराज

तो जल के नीचे जा।

जलपरी

(धीरे-धीरे जल के अंदर उतरते हुए)

बस जा रही हूँ... मछेरे से
तो खेल सकती हूँ न?

जलराज

हाँ, खेल जितनी इच्छा।

जलपरी कंधों तक जल में उतरकर जलराज को देखते हुए करुणाकारी प्रकार से मुस्कुराती है।

तुम भी विचित्र हो बेटी!
तुम्हारा ही भला मैं सोचता हूँ।
वह बस तुम्हें बरबाद कर देता,
झरने के उस पथरीले तल पर खींचकर
यह गोरा तन घायल कर देता
और फिर अकेली छोड़ता
किसी सूखी जगह पर।

जलपरी

मगर वह सुंदर है!

जलराज

फिर से शुरू?

जलपरी

नहीं, नहीं, नहीं! मैं जा रही हूँ!
(डूब जाती है)

जलराज
(ऊपर देखते हुए)
वसंत की धूप तीव्र हो रही है...
दम घुटता है! मैं भी ठंडा हो लूँ।
(स्वयं भी जल में उतरता है)

अंक 1

वही स्थान है परंतु वसंत का प्रभाव और अधिक दिखाई दे रहा है। वन का किनारा कोमल हरियाली से सजा है, कहीं न कहीं पेड़ों की ऊपरवाली टहनियाँ भी सुनहरे-हरे रंग की हैं। झील भरा हुआ लग रहा है और हरे तट इस को हरियाली की माला की भांति सजाए हुए हैं।

वन से मैदान पर लेव मामा तथा उसका भांजा लूकाश निकल आते हैं। लेव काफीं वृद्ध आदमी है, देखने में भव्य तथा नेक लगता है। पोलीस्स्या की शैली के अनुसार उसके लंबे बाल धूसर रंग की टोपी के नीचे से सफ़ेद लहरों की भांति कंधों पर उतरते हैं। वह सूती कपड़े पहना है, ऊपर से हल्के सलेटी, लगभग सफ़ेद रंग का स्वीता[4], पैरों में छाल के जूते। हाथों में मछली पकड़ने का सामान, कंधे पर बक्कल का थैला चौड़े पत्ते के साथ।

लूकाश नौजवान लड़का है, सुंदर, काले भौंहोंवाला, सुडौल, आँखों में कुछ बच्चों सा झलक रहा है। उसी प्रकार के सूती कपड़े पहना है पर सूत थोड़ा पतला है। सफेंद कढ़ाइयें से सजा हुआ और सुंदर गरदनीवाला कुर्ता ढीला किया हुआ और

[4] पुराने ढंग का जाकेट.

लाल कमरबंद से बांधा हुआ है, गरदनी व आस्तीनों पर लाल रंग के बकसुए हैं। स्वीता नहीं पहना है। सिर पर भूसे की टोपी है। कमर पर चाकू तथा रस्सी। झील के तट तक पहुंचकर लूकाश रुक गया।

लेव

क्यों रुक गए हो? दलदली जगह है,
यहाँ मछली नहीं पकड़ सकते।

लूकाश

बस मैं मुरली बनाना चाहता था -
यहाँ का सरपट बढ़िया लगा।

लेव

तुम्हारे पास पहले से ढेर सारी मुरलियाँ हैं।

लूकाश

नहीं, कितनी हैं? स्नोबाल की,
नम्रा की, फिर लिडेन की - बस।
मुझे सरपत की भी बनानी है -
वह बढ़िया बजती है!

लेव

ठीक है, कर लो अपनी मस्ती,
इसीलिए परमात्मा ने त्योहार दिया है।
और कल हम आएंगे यहाँ झोंपड़ा बनाने।
गाय-भैंसों को चराने के लिए
वन में ले आने का समय आया है।

देखो, वह घास उगने लगी धरती पर।

लूकाश

यहाँ अपना बसेरा कैसे होगा?
कहते हैं लोग यह स्थान सही नहीं है...

लेव

वह सब व्यक्ति पर होता है निर्भर।
मैं भांजे जानता हूँ कि किस के साथ
और कैसा व्यवहार करना सही है -
क्रास किधर है लगाना और कहाँ
एस्प वृक्ष की कील, कहाँ
बस तीन बार थूकना काफ़ी होता है।
हम बोएंगे खसखस झोंपड़े के निकट,
ड्योढ़ी के पास श्यामकंट उगेगा -
फिर पास न आएगी कोई भी दुष्ट शक्ति...
ठीक है, चलता हूँ, देखो अपना काम।

दोनों अपने-अपने रास्ते से चलते हैं। लूकाश झील के पास आकर सरपत में अदृश्य हो जाता है। लेव किनारे पर चलकर नम्रा के पेड़ों के पीछे लुप्त हो जाता है।

जलपरी

(तैरकर तट पर निकलती है और चिल्लाती है)

दादा! वनराज! बचाइये! संकट आया है!

वनराज

(छोटा, दाढ़ीवाला वृद्ध पुरुष, उसकी गति तीव्र है, रूप उदार है; पेड़ों के छाल जैसे रंग के कपड़े, कशीके के छाल की रोयेंदार टोपी)

तुम क्यों चिल्ला रही हो? क्या हुआ?

जलपरी

वहाँ एक युवक सरपत काट रहा है
मुरली बनाने के लिए!

वनराज

हाय-हाय! इतनी सी बात है? फिर?
इतनी कंजूस मत होना।
उनका मकान भी तो यहीं बनेगा
और कोई आपति मुझे नहीं है
कच्ची लकड़ी बस काटें न।

जलपरी

बाप रे! मकान? यहाँ रहेंगे मानव?
घास के छतों के नीचे जो रहते हैं -
मुझे घृणा है उन से,
उस सूखी घास की गंध से!
उस गंध को दूर करने के वास्ते
डुबाती हूँ मैं उनको जल में।
उन परजीवों को आने दो ज़रा -
उन्हें मैं गुदगुदाकर ही रहूंगी[5]!

---

[5] युक्रैनी मिथकों के अनुसार जलपरियाँ अपने मनोरंजन के लिए मनुष्यों को मौत तक गुदगुदा सकती हैं.

वनराज

रुको! अधिक ही तीव्र तुम बन रही हो।
लेव काका झोंपड़े में रहेगा
और वह हमारा मित्र है। बस मज़ाक में
एस्प व श्यामकंट से डराता है कभी।
मुझे उस बूढ़े से लगाव है। वह न होता
यह बांज तो काटा होता कब से,
जिस ने हमारी बैठकें व नाच हैं देखी
और वन के हैं इतने रहस्य जाने।
जर्मन भी आए इसको नापने,
तीन जन खड़े हुए बाहें फैलाकर
तब भी मुश्किल से उनके हाथ मिले।
वे पैसे दे रहे थे, वे सिक्के
जो मानव को अत्यंत प्रिय होते हैं।
पर लेव ने प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक जीवित है
इस बांज को काटने नहीं देगा।
तब मैं ने अपनी दाढ़ी की शपथ ली
कि परिवार सहित लेव का सदा
रहेगा स्वागत वन में।

जलपरी

अच्छा! और मेरे बापू उन सब को डुबा देंगे जल में!

वनराज

ज़रा भी हिम्मत की उस ने तो पूरी झील
ढ़ांक दूंगा सड़ी पत्तियों से!

जलपरी

कितना डरावना! हँ-हँ-हँ!

(झील में छुप जाती है)

वनराज कुछ भुनभुनाते हुए गिरे हुए पेड़ पर बैठकर अपनी पाइप जला लेता है। सरपत से मुरली की आवाज़ आती है (राग 1,2,3,4), कोमल, गिटकिरीपूर्ण; उसके बढ़ने के साथ-साथ वन में सब कुछ विकसित हो रहा है। पहले नम्रा व भदुरों पर पत्तियाँ झलकने लगीं, फिर बर्च के भी पत्ते हिलने लगे। झील पर लीलियाँ खुलीं और कुमुदिनियों के फूल चमकने लगे। जंगली गुलाब की कलियाँ निकलती हैं।

पुरानी, टूटी हुई, आधी सूखी नम्रा के तने के पीछे से मावका (वनपरी) निकल आती है, हलके हरे रंग के कपड़े पहनी हुई, हरे चमक के साथ खुले काले बाल, हाथ फैलाती है और हथेली से अपनी आँखें पोंछती है।

मावका

हाय, मैं इतनी देर तक सोई!

वनराज

हाँ बेटी! नींद के पौधे के फूल
अब सूखने भी लगे हैं।
अब कोयल अपने घर माखन बनाकर
जल्द ही लाल रंग के छोटे जूते पहनेगी
और लोगों की उम्रें गिनती रहेगी।
पक्षी-मेहमान दक्षिण से आ गए हैं,
और जंगली बत्तक के बच्चे
पीले रोओं की भांति जल पर तैर रहे हैं।

मावका

मगर मुझे जगाया किसने?

वनराज

वसंत ने, शायद।

मावका

इस भांति
वसंत ने तो कभी नहीं था गाया
जैसे इस बार। सपना था क्या?
लूकाश फिर मुरली बजाता है (राग 5)
नहीं... रुको... हाँ! सुन रहे हो?..
वसंत वह गा रहा है क्या?
लूकाश राग 5 बजाता है, इस बार निकट।

वनराज

नहीं, बस एक युवक मुरली बजा रहा है।

मावका

वह कौनसा? बांध तोड़नेवाला?
उस से तो यह नहीं थी आशा!

वनराज

नहीं, एक मानव युवक, लेव का भांजा,
लूकाश है उसका नाम।

मावका

उसे मैं नहीं जानती।

वनराज

अभी तो आया है वह दूर से।
इस वन का वह नहीं, उन चीड़-वनों का है
जहाँ शिशिर बिताती अपनी नानी।
अनाथ वह हो गया है माँ-विध्वा के साथ
तो लेव ले आया फिर दोनों को अपने घर।

मावका

मैं उसको देखना चाहूँ...

वनराज

किसलिए?

मावका

वह शायद सुंदर है!

वनराज

उन मानव युवकों पर आँख मत डालना,
वन की कन्याओं के लिए वह खतरनाक है...

मावका

तुम कितने सख़्त बने हो दादा जी!
मुझे परदे में इस तरह रखोगे
जैसे जलराज उस जलपरी को?

वनराज

ना बेटी, ऐसा तो नहीं है।

जलराज को आदत है सब कुछ
अपने दलदल के अंदर खींचने की।
स्वतंत्रता का आदर मैं करता हूँ।
पवन से खेलो जब इच्छा
या पेरेलेस्निक के साथ मस्ती मारो
और सारी शक्तियाँ - चाहो वन की या जल की,
पहाड़ों की, पवन की - सभी को खींच लो अपनी ओर,
पर मानव की राहों से दूर रहना बच्ची,
उन पर स्वतंत्रता नहीं चलती,
सिर्फ़ दुख बोझ लादकर घूमता है।
बचकर रहना उस राह से बेटी,
बस एक कदम रखा - स्वतंत्रता समाप्त!

मावका *(हँसती है)*
स्वतंत्रता समाप्त - वह कैसे हो सकता है?
फिर पवन भी एक दिन समाप्त हो जाए!

वनराज कुछ उत्तर देना चाहता है परंतु उसी क्षण लूकाश हाथ में मुरली लिये निकल आता है। वनराज और मावका छुप जाते हैं। लूकाश चाकू से बर्च के पेड़ में छेद करने जा रहा है उसका रस निकालने के लिए, मावका उसकी ओर लपककर उसका हाथ पकड़ लेती है।

मावका
छोड़ो! छोड़ो! मत काटो! मारो मत!

लूकाश
अरी क्या बोल रही हो तुम लड़की?
मैं कोई डाकू थोड़े ही हूँ! बर्च का रस

निकालकर पीना चाहता था।

मावका

यह इसका रक्त है, मत बहाओ!
मेरी बहन का रक्त मत पीना तुम!

लूकाश

बर्च को अपनी बहन कहती हो?
तुम कौन हो?

मावका

मैं मावका, वनपरी हूँ।

लूकाश

(कम आश्चर्य और अधिक ध्यान से उस को देखता है)
अच्छा! बड़ों से कितनी बार
वनपरियों के बारे में सुना था
पर स्वयं तो कभी नहीं था देखा।

मावका

और देखना चाहते थे?

लूकाश

क्यों नहीं?.. तुम तो बिल्कुल
लड़की की भांति हो... और वह भी तुम
ठाकुर के परिवार की लग रही हो...
हाथ गोरे हैं, पतला बदन...

कपड़े भी हैं विचित्र प्रकार के...
बस आँखें क्यों हरी नहीं हैं?
(ध्यान से देखता है)
नहीं, अब हो गईं हरी... पहले तो
थीं नीली अंबर की तरह... होए, अब हैं सलेटी
बादल की भांति... और फिर काली,
या भूरी, हो सकता... तुम विचित्र हो ही!

मावका
(मुस्कुराते हुए)
तुम्हें अच्छी लगी हूँ?

लूकाश
(शर्माते हुए)
मुझे नहीं पता...

मावका
फिर किस को है पता?

लूकाश
(पूरा शर्माया हुआ)
क्या पूछती हो...

मावका
(सहज आश्चर्य से)
किस ने मना किया यह पूछना?
वह देखो, जंगली गुलाब कहती है:
"क्यों सुंदर हूँ मैं न?"

एश वृक्ष के ऊपर से उत्तर मिलता है:
“संसार में तुम सब से सुरूप हो!”

लूकाश
कभी न सोचा था वे बातें कर सकते हैं।
समझा था पेड़ की है न कोई भाषा।

मावका
हमारे वन में गूंगा कुछ नहीं है।

लूकाश
क्या तुम सदा से वन में ही रही हो?

मावका
कभी नहीं इस के परे निकली हूँ।

लूकाश
और कब से रह रही हो इस संसार में?

मावका
सच पूछो तो कभी न सोचा है
इस बारे में...
(सोच में पड़ जाती है)
मुझे लगता है मैं सदा से हूँ...

लूकाश
सदा से ऐसी ही रही हो?

मावका

लगता है ऐसी ही...

लूकाश

और कौनसा है तुम्हारा परिवार?
वह है भी क्या?

मावका

है न। वनराज। मैं उस को "दादा जी" पुकारती हूँ,
और वह मुझे "बच्ची" या "बेटी"।

लूकाश

तो फिर वह कौन है, पिता या दादा?

मावका

पता नहीं। क्यों कोई अंतर है?

लूकाश

(हँस रहा है)
बहुत विचित्र हो तुम वनवालो! फिर कौन है
तुम्हारी माँ या दादी, या जो भी तुम उन्हें कहती हो?

मावका

कभी-कभी मुझे लगता है कि नम्रा -
वह पेड़ पुराना और सूखा - मेरी माँ है।
शिशिर में आश्रय उसी ने दिया था,
मेरे लिए बिछाकर नर्म बिस्तर

लकड़ी के धूल से।

लूकाश
वहीं तुम ने शिशिर बिताया?
वहाँ तुम क्या करती रही?

मावका
कुछ नहीं। बस सोई।
शिशिर में कौन कुछ करता है?
"सो जा..." - नम्रा चरचर करती रही।
और स्वप्न देखे मैं ने सब सफ़ेद:
चमक रहे थे चांदी में जवाहर,
अनजाने पौधे, फूल फैले थे सामने
चमकीले, श्वेत... शांत कोमल तारे
गिरते अंबर से - श्वेत, अपारदर्शी -
उन से शिविर बनते थे... चारों ओर
सब श्वेत व शुद्ध... बिल्लौर का हार
चमक और गुंज रहा था...
सोई मैं... मुक्ति भरी थी मेरी सांस...
सोच का गुलाबी जाल
सफ़ेद निद्रा पर धीमे लग रहा था...
स्वर्ण एवं नीले स्वप्न बुने ही जा रहे थे,
शांत, मौन - गृष्म के स्वप्नों जैसे नहीं...

लूकाश
(अभिभूत होकर)
कैसी तुम्हारी बातें हैं...

मावका

तुम्हें पसंद है?

लूकाश “हाँ” में सिर हिलाता है।

तुम्हारी इस मुरली की बातें और प्यारी हैं।

बजाओ तुम मेरे लिए, मैं झूलूंगी ज़रा।

मावका नम्रा की लंबी टहनियाँ आपस में बांधकर उन पर बैठ जाती है और धीमे से झूलने लगती है मानो पालने में। लूकाश वसंत के राग बजाता है। राग 8 सुनते हुए मावका अनैच्छिक रूप से स्वयं भी कुछ गुनगुनाने लगती है और लूकाश उस के लिए राग 8 दोबारा बजा देता है। गायन एवं संगीत के स्वर संगम में बज रहे हैं।

मावका

कितना मीठा बज रहा है,

कितना गहरा चुभ रहा है,

गोरा सीना काटकर दिल निकाल रहा है!

वसंत का राग सुनकर कोयल भी चिहचिहाने लगता है, फिर बुलबुल, जंगली गुलाब और अधिक चमक से खिल उठता है; स्नोबाल सफेद फूलों से सजा है; कार्नेलियन चेरी का पेड़ गुलाबी फूलों से ढंककर मानो शरमा रहा हो; यहाँ तक कि पत्ताहीन श्यामकंट के पौधे पर भी कोमल फूल निकलते हैं।

मावका मोहित होकर धीमे से झूलते हुए मुस्कुरा रही है किंतु उसकी आँखों में किसी बड़े दुख के आँसू चमक रहे हैं। यह देखकर लूकाश संगीत बजाना बंद करता है।

लूकाश

अरी लड़की, तुम रो रही हो?

मावका

भले मैं रो रही हूँ?
(हाथ से अपनी आँखें छू लेती है)
हाँ, सच में... नहीं! यह रात की ओस है।
डूब रहा है सूरज... देखो, झील पर
कोहरा भी छा रहा है...

लूकाश
नहीं, अभी समय है!

मावका
तुम नहीं चाहते कि यह दिन समाप्त हो जाए?
लूकाश सिर हिलाकर दिखाता है कि नहीं चाहता।
क्यों?

लूकाश
मामा गाँव जाने के लिए बुलाएंगे तब।

मावका
और चाहते हो तुम मेरे साथ रहना?
लूकाश "हाँ" में सिर हिलाता है।
देखो तुम भी उस एश वृक्ष की भांति बोलते हो।

लूकाश
(हँसते हुए)
यहाँ की शैली तो अपनानी ही पड़ेगी
यहीं हैं गर्मियाँ बितानी तो...

मावका
(प्रसन्नता से)

सच?

लूकाश
कल ही निवास बनाने में लगेंगे।

मावका
डेरा लगाओगे?

लूकाश
नहीं, लगाएंगे हम झोंपड़ा
या, हो सकता, पक्का मकान।

मावका
तुम पक्षियों की भांति कष्ट उठाकर
घोंसले बनाते हो फिर छोड़ने के लिए।

लूकाश
नहीं, हमेशा के लिए बना रहे हैं।

मावका
हमेशा? तुम ने कहा कि केवल
हैं गर्मियाँ यहाँ बितानी।

लूकाश
(शरमाते हुए)
मुझे नहीं पता... लेव मामा ने कहा था
कि देंगे मुझे इधर घर और खेत,
फिर शरद में कराएंगे विवाह...

मावका

(घबराकर)

किस से?

लूकाश

पता नहीं। यह मामा ने नहीं बताया,

या हो सकता, लड़की अभी नहीं मिली हो।

मावका

क्यों? तुम खुद नहीं खोज पाओगे लड़की?

लूकाश

(उस को देखते हुए)

मैं, शायद, खोज भी पाता, परंतु...

मावका

परंतु क्या?

लूकाश

वह... कुछ नहीं...

(धीमे से मुरली बजाता है, राग बहुत दुखद निकलता है [राग 9], फिर मुरली थामे हाथ नीचे करके सोच में पड़ जाता है)

मावका

(थोड़ी चुप रहकर)

मनुष्यों की कितने दिन के लिए

बनती हैं जोड़ियाँ?

लूकाश
बनती हैं तो हमेशा के लिए!

मावका
कबूतरों की भांति...
मैं ने कभी ईर्ष्या भी की थी उन से,
कितना है कोमल उनका प्रेम...
मैं तो कुछ कोमल जानती तक नहीं हूँ
बर्च के सिवा, इसीलिए
अपनी बहन पुकारती हूँ उसे;
पर वह कुछ ज़्यादा ही उदास रहती है -
इतनी है फीकी, झुकी और दुखी -
मैं अक्सर रो पड़ती हूँ उस को देखकर।
भिदुर को मैं पसंद नहीं करती - कठोर है वह।
आस्पेन वृक्ष से मुझ को जाने क्यों डर लगता है,
वह स्वयं भी डरा रहता है, कांपता है।
बांज गौरवपूर्ण अधिक हैं। जंगली गुलाब
लड़ाकू है, कार्नेलियन चेरी व श्यामकंट की भांति।
एश, मैपिल आदि घमंडी हैं।
स्नोबाल स्वयं को इतनी सुंदर मानती है
कि और किसी से क्या उसे मतलब।
एक वर्ष पहले मैं भी कुछ ऐसी थी,
पर जाने क्यों अब उस से शर्म है आ रही...
जब ऐसे देखा जाए तो इस वन में
बिल्कुल अकेली हूँ मैं...
(दुखी होकर सोच में पड़ जाती है)

लूकाश
और नम्रा तुम्हारी?
उसे तुम ने तो माँ कहा था न?

मावका
नम्रा... वह क्या... शिशिर में मेरा आश्रय है
और गृष्म में... देखो कितनी वह सूखी है...
बस चरचराती है और हिम को याद करती है...
नहीं, बिल्कुल, बिल्कुल अकेली हूँ मैं...

लूकाश
वन में सिर्फ पेड़ ही पेड़ नहीं हैं -
बहुत हैं सारी इधर शक्तियाँ।
(थोड़ी दिल्लगी से)
ये बातें मत बनाओ, वन की जनता के
मज़ाकों, नाच व दावतों के बारे में सुना है!

मावका
सहसा उठी आंधी की भांति है वह सब -
आया, घुमाया, छोड़ा - बस।
मनुष्यों में जैसा यहाँ नहीं होता
हमेशा के लिए!

लूकाश
(पास आते हुए)
और तुम चाहती हो?

अचानक लेव मामा के ज़ोर से पुकारने का स्वर आता है।

स्वर

हे लूकाश! होए! हे-हे-हे-हे! किधर हो तुम?

लूकाश

(उत्तर में)

बस आ रहा हूँ!

स्वर

जल्दी आ जा!

लूकाश

इतनी भी क्या जल्दी है!

(उत्तर में)

अभी बस आया!

(जाने लगता है)

मावका

फिर आओगे?

लूकाश

पता नहीं।

(तट के झाड़ों में चला जाता है)

घने वन से पेरेलेस्निक उड़ आता है - लाल कपड़े पहना सुंदर युवक, काली भौंहें, चमकती हुई आँखें। मावका को बाहों में लेना चाहता है, वह हट जाती है।

मावका

हाथ मत लगाना!

पेरेलेस्निक
ऐसा क्यों?

मावका
तुम खेत में जाकर देखो की रई
अब तक हरी हुई है या नहीं।

पेरेलेस्निक
उसकी मुझे आवश्यकता है क्या?

मावका
रई में ही तुम्हारी खेतपरी रहती है।
वह हरियाली का सेहरा तुम्हें पहनाने के लिए
बनाने भी लगी होगी।

पेरेलेस्निक
उसे मैं भूल चुका हूँ।

मावका
भूल जाओ मुझको भी।

पेरेलेस्निक
ऐसा मज़ाक तुम मत करो!
चलो उड़ जाते हैं! तुम्हें
ले जाऊंगा मैं परवतों में,
तुम्हारा मन था फर के पेड़ देखने का न?

मावका

अब नहीं है।

पेरेलेस्निक

अच्छा? वह क्यों?

मावका

इच्छा नहीं रही है बस।

पेरेलेस्निक

बकवास! वह क्यों नहीं रही?

मावका

लुप्त हो गई है चाह।

पेरेलेस्निक

(लुभाते हुए उस के पास नाच रहा है)

चलो पहाड़ों में उड़ते हैं! वहाँ की परियाँ,
मेरी बहनें, स्वतंत्र उड़नेवाली हमें मिलेंगी,
वे बिजलियों की भांति नाच करेंगी
घास पर बनाकर चक्र!
तुम्हारे लिए खोजेंगे पर्णांग का फूल,
आकाश से तारा लाएंगे, वह सोने का कमाल,
पहाड़ की बर्फ़ का गर्मियों में भी
तुम्हारे पोषाक का सफ़ेद रहेगा जादू,
वन का मुकुट तुम ही पहनोगी
चाहे हमें पड़े उस के लिए

सिंहासन से गिराना नागिन-रानी को,
और स्वयं सुरक्षित रहेंगे फिर
घिरकर चकमाकी परवतों से!
मेरी प्रियतमा तुम बनना!
संध्या-प्रभात में लाया मैं करूंगा
रंग-बिरंगे कपड़े,
फिर सेहरा बनेगा और नाच नचेगा,
पंखों पर तुम्हें ले चलूंगा मैं
लाल समुद्र पर जिस की
जादुई गहराई में
सूरज स्वर्ण छुपाता।
तागा कातनेवाले तारे की खिड़की में
झांकेंगे, फिर देगी वह चांदी का एक धागा
जिस से मखमल की छाया को
हम सजा सकेंगे।
फिर सुर्योदय के समय जब
श्वेत भेड़ों की भांति नभ के तट पर
आकर रात का ठंडा पानी
पीने लगें बादल,
तब हम लेटेंगे आराम से फूलों के...

मावका
(अधीरता से)
बस! बस करो!

पेरेलेस्निक

कितनी कठोरता से तुम ने मेरी बात काटी!
(दुख और साथ में चतुरता से)
क्या भूल गई तुम पिछली गर्मियाँ?

मावका
(निर्भावपूर्वक)
हाय, वे कब की बीत गई हैं!
उधर जो गा रहा था शिशिर में सो गया है।
मुझे तो याद नहीं है!

पेरेलेस्निक
(रहस्यपूर्वक याद दिलाते हुए)
और बांज के उपवन में?

मावका
क्या था वहाँ? मैं ढूँढ रही थी उधर
बेरियाँ व खुम्बियाँ...

पेरेलेस्निक
तुम मेरे पदचिह्न ढूँढ रही थी शायद?

मावका
हाप के पत्ते मैं तोड़ रही थी उस उपवन में...

पेरेलेस्निक
मेरे लिए बनाने नरम बिस्तर?

मावका

नहीं, ये काले बाल बांध लेने के लिए!

पेरेलेस्निक

प्रेमी की बाहों की नहीं थी आशा?

मावका

नहीं, झुला रही थीं स्नेह से बर्च की बाहें।

पेरेलेस्निक

मगर... लगता है... प्यार किसी से था तुम्हें?

मावका

हँ-हँ-हँ! पता नहीं! उपवन से पूछो।
मैं जा रही हूँ बाल सजाने
हरियाली से...
(वन की ओर चल पड़ती है)

पेरेलेस्निक

देखो, ठंडी ओस से न धुले फिर!

मावका

पवन चलेगा, धूप निकलेगी,
ओस फिर होगी लुप्त!
(वन में अदृश्य हो जाती है)

पेरेलेस्निक

एक मिनट तुम रुको!
मर जाऊंगा यदि तुम बिन रहा!

कहाँ हो तुम? कहाँ? कहाँ?

स्वयं भी वन में दौड़ा जाता है। पेड़ों में थोड़ी देर तक उसके लाल कपड़े दिखाई दे रहे हैं तथा प्रतिध्वनि की भांति "कहाँ हो तुम? कहाँ?.." सुनाई दे रहा है।

वन पर लाल सुर्यास्त की चमक खेल रही है, फिर बुझ जाती है। झील के ऊपर सफेंद कोहरा छा जाता है।

लेव मामा और लूकाश मैदान पर आते हैं।

लेव

(क्रोध से बडबडा रहा है)

घृणित जलराज! सूख जाए वह!
मैं मछलियाँ पकड़कर झील को
पार करनेवाला था जब उस ने
अपने बलवान पंजे से नाव की पेंदी को
पकड़ लिया कि आगे मैं न बढ़ सका!
नाव डूबते-डूबते बच गया!
मगर मूर्ख मैं भी थोड़े ही हूँ -
पानी में हाथ डुबोकर उसकी दाढ़ी
पकड़ ली और लपेटी, फिर कमर से
निकाला चाकू - ऊपरवाला जाने -
मैं दाढ़ी काट ही देता! पर उस घिनौने भूत ने
धक्के से नाव पलटा दिया!
मुश्किल से जीवित तट पर पहुंचा मैं,
मछली भी न रही... धत्तेरे कि!

(लूकाश से)

और तुम पता नहीं कहाँ थे गुम -
बुलाया, चीखा - तुम्हें क्या चिंता!

कहाँ भटके थे?

लूकाश

मैं तो यहीं मुरली बना रहा था।

लेव

बहुत लगती है देर तुम्हें
मुरली बनाने में। क्यों भांजे?

लूकाश

(शर्माते हुए)
मैं, मामा, क्या करता...

लेव *(मुस्कुराकर नेक हो गया)*
तुम झूठ बोलना मत सीखो, अभी जवान हो!
ज़ुबान पर तरस खाओ! इस से अच्छा
तुम सूखी लकड़ी वन से ढूँढकर लाओ
और आग जलाओ - स्वयं को सुखा लूँ थोड़ा,
ऐसे घर कैसे जाऊँ?
रास्ते में वह भी हमला कर सकती है
जिसका मैं नाम न लूँ तभी अच्छा है,
फिर कांपने के लिए विवश करेगी
जब तक शरीर से आत्मा न निकले...

लूकाश वन में चला जाता है, फिर वहाँ से सूखी लकड़ी टूटने का स्वर आता है।

लेव

(बांज के पेड़ के नीचे एक मोटे जड़ पर बैठ जाता है और पाइप जलाने के लिए चकमक करता है)

अच्छा! नहीं निकलेगी आग,
सब गीला हो गया... धत्तेरे कि...
अब देखनी होगी बांज पर नई काई।
(काई ढूँढते हुए बांज पर हाथ फेरता है)

झील की ओर से कोहरे से किसी स्त्री की सफ़ेद छाया निकलती है, जो देखने में मनुष्य कम और कोहरे की धारी अधिक लगती है, लंबे सफ़ेद हाथ बढाए और लंबी उंग्लियाँ समेटनेवाले ढंग से हिलाते हुए वह लेव की ओर बढ़ रही है।

लेव *(बहुत डरकर)*
यह कौनसी भूतनी है?
अच्छा! समय पर देख लिया है।

(होश में आकर वह अपने थैले से कुछ जड़ियाँ व पौधे निकालकर भूत की ओर बढ़ाता है मानो उस से बचते हुए। भूतनी थोड़ी पीछे हट जाती है, लेव जपने लगता है तीव्रता बढ़ाते हुए)

हे शापित कन्या, बीमारी की भूतनी!
जा दूर यहाँ से दलदल में,
जहाँ लोग न रहते, मुर्गे नहीं चिल्लाते,
जहाँ तक मेरा स्वर न पहुंचता।
यहाँ तू न चलेगी, गोरा शरीर नष्ट न करेगी,
रक्त काला न पिएगी, आयु न काटेगी,
यह ले नागदाना - और लुप्त हो जा, लुप्त!

मृत्यु की भूतनी पीछे झील की ओर हटती है और कोहरे में विलीन हो जाती है। लूकाश ढेर सारी सूखी लकड़ियाँ लिए आकर मामा के सामने रखता है, फिर कुर्ते में से आग चकमक करने का सामान निकालकर आग जलाता है।

लूकाश

यह लीजिये मामा, हो जाइये गरम।

लेव

धन्यवाद। तुम ने इस बूढ़े मामा को प्रसन्न किया है।

(आग से अपनी पाइप जला लेता है)

अब तो संतुष्ट हूँ।

(आग के सामने घास पर लेटकर और सिर के नीचे थैला रखकर पाइप का कश लेते हुए व आँखें मीचते हुए आग को देखता है)

लूकाश

सुना दें मामा जी, कोई कहानी।

लेव

फिर छोटे हो गए हो क्या? कहानी कौनसी?

“ओह” नाम के जादूगर या त्र्योंसिप का किस्सा[6]?

लूकाश

वे सब सुनी हैं। आपको तो

ऐसी भी आती हैं जो और कोई न जाने।

लेव

(सोचकर)

सुनो फिर, मैं बताऊंगा

लहरों की राजकुमारी का किस्सा।

(शांत, सुरीली व तालयुक्त स्वर में सुनाना आरंभ करता है)

घर हो गरम और सुननेवाले हों भले

---

[6] युक्रैनी लोक-कथाएँ.

तब तो कथा सुनाते रह सकते हैं हम
सवेरे तक...
चीड़ों के वनों, गहरे समंदरों
और ऊँचे पर्वतों के पार
अत्यंत अद्भुत एक देश है
जिसके राजा का नाम उराय है।
उस देश में न सूरज डूबता न चांद बुझता,
चमकीले तारे खेतों में
चलते हुए नृत्य करते हैं।
उन में सब से सुंदर सितारे का
श्वेत पल्यनीन नाम का एक पुत्र था।
चेहरे से गोरा, देखने में प्यारा,
सुनहरे बाल हवा में नाचते हैं,
चांदी के अस्त्र हाथों में चमकते हैं...

लूकाश
आप राजकुमारी की बतानेवाले थे।

लेव
ठहरो ज़रा!
श्वेत पल्यनीन की आयु जब हुई
वह अपने जीवन पर विचार करने लगा:
“सभी में से मैं सुंदर हूँ,
पर भाग्य न खुला है अब तक।
हे मेरी माँ, सितारे, दो परामर्श -
किधर मैं ढूँढूँ जीवन-साथी:

दरबारी लोगों में, प्रसिद्ध योद्धाओं में,
राजाओं या फिर आम जनता में?
शायद न होगी मेरे योग्य
कोई भी राजकुमारी..."
(लेव की आँखें झपकने लगती हैं)
फिर गया वह नीले सागर के किनारे,
बिछाया तट पर मोतियों का हार...

लूकाश
कुछ छोड़कर तो नहीं बता रहे हैं मामा जी?

लेव
हें?.. तुम बीच में मत बोला करो!
...फिर सागर में बड़ी लहर उठी
और उस लहर से घोड़े उड़ निकले,
चिंगारों जैसे लाल, जोते हुए लाल रथ में...
उस रथ में...
(नींद में डूबकर चुप हो जाता है)

लूकाश
उस रथ में कौन था? राजकुमारी?

लेव
(नींद में से)
हें? कहाँ है?.. कौन राजकुमारी?

लूकाश

सो चुके हैं।

(सोच में डूबे कुछ देर तक आग को देखता है, फिर उठता है और अलाव को छोड़कर मैदान में घूमने लगता है धीमे से मुरली बजाते हुए [राग 10])

वन में अंधेरा छा रहा है पर घना नहीं, पारदर्शी, जैसा चांद निकलने से पहले होता है। अलाव के चारों ओर ज्योति की झलकें व परछाइयाँ मानो कोई अद्भुत नृत्य कर रही हों; अलाव के पासवाले फूल कभी अपने रंगों से चमक उठते हैं तो कभी अंधेरे में बुझ जाते हैं।

वन के किनारे आस्पेन तथा बर्च के पेड़ों के श्वेत तने रहस्यपूर्ण दिख रहे हैं। वसंत का पवन अधीरता की आह भरता है वन के किनारे दौड़ते हुए और पेड़ों की टहनियों से खेलते हुए। झील का कोहरा श्वेत लहरों की भांति काली झाड़ियों पर टूटता है; अंधेरे में छुपकर सरपत प्रतृण से फुसफुसाते हुए बातें कर रहा है।

झाड़ियों में से मावका दौड़ आती है, वह तीव्र दौड़ रही है जैसे किसी से भाग रही हो; उसके बाल व कपड़े लहराए हुए हैं। मैदान में वह रुकती है, पीछे मुड़कर देखती है दिल पर हाथ लगाकर, तब बर्च की ओर लपक जाती है और फिर रुकती है।

मावका

हे जादुगरनी रात, तुम्हारा धन्यवाद
करती हूँ कि छुपा लिया मेरा चेहरा!
तुम्हारा भी, उलझी हुई पगडंडियो,
कि बर्च के निकट लेकर आईं!

(बर्च के नीचे छुपकर उसके तने से लिपट जाती है)

लूकाश

(बर्च के पास आता है, धीमे से)

मावका, तुम?

मावका

(और धीमे से)

मैं।

लूकाश

तुम दौड़कर आई?

मावका

गिलहरी की भांति।

लूकाश

किसी से भाग रही थी?

मावका

हाँ!

लूकाश

किस से?

मावका

जो अग्नि जैसा है - उस से।

लूकाश

कहाँ है वह?

मावका

चुप!.. उड़ आएगा वह फिर।

सन्नाटा।

लूकाश

तुम कांप रही हो! यह अहसास है मानो
यह बर्च भी चिंतित होकर कांप उठी है।

मावका

(बर्च से हट जाती है)

बाप रे! तब तो नहीं लिपटूंगी इस से,
मगर खड़ी भी तो नहीं मैं रह सकती।

लूकाश

तो लिपटो मुझ से। मैं बलवान हूँ -
सहारा दूंगा, करूंगा रक्षा।

मावका उसकी बाहों में आ जाती है। कुछ देर तक दोनों लिपटकर खड़े रहते हैं। चांदनी वन में फैलने लगती है, मैदान पर छा जाती है, बर्च के नीचे भी पहुंचती है। पवन झटके सी आह भरता है। चमकते कोहरे में से जलपरी निकलती है और चुपचाप युवन जोड़े को निहारती है।

लूकाश मावका को सीने से लगाकर धीरे-धीरे उसकी ओर अपना मुंह झुकाता है, फिर अचानक उसका चुंबन ले लेता है।

मावका

(सुख की पीड़ा की चीख निकालकर)

ओह! सितारा टूटकर दिल में आ गिरा!

जलपरी

हँ-हँ-हँ!

(हँसते हुए और ज़ोर से पानी उछालते हुए झील में कूद जाती है)

लूकाश

(डरकर)
वह क्या है?

मावका
डरना नहीं, वह जलपरी है।
सखी है मेरी, तंग नहीं करेगी।
वह मुक्त स्वभाव की है, बहुत विनोद करती है,
पर कोई अंतर अब नहीं पड़ता है मुझको...
संसार में न रहा किसी से कोई अर्थ!

लूकाश
मुझ से भी?

मावका
नहीं, मेरे लिए तुम स्वयं एक संसार हो,
उस से भी प्यारा तथा सुंदर
जिसे मैं ने जाना था अब तक,
यध्यपि वह भी बेहतर हो गया है
जब से हम दोनों बन गए हैं एक।

लूकाश
हम एक भी बन चुके हैं?

मावका
तुम सुन सकते हो न
कि बुलबुल शादी की घंटी बजा रहे हैं?

लूकाश

हाँ, सुन सकता हूँ... ये चहचहा नहीं रहे हैं,
बजाय अपनी आम गिटकिरी के
ये गा रहे हैं: "चूमो! चूमो! चूमो!"
(उसका लंबा, कोमल, कांपता हुआ चुंबन लेता है)
तुम्हारी जान निकालूंगा मैं चूमते-चूमते!

पवन का झोंका आता है, पेड़ों के सफ़ेद फूल बर्फ़ की आंधी की भांति मैदान में मंडरा रहे हैं।

मावका

नहीं, मैं मर नहीं सकती...
इस बात का खेद है...

लूकाश

क्या बोल रही हो! यह नहीं सुनना है!
मैं ऐसा बोला किसलिए?!

मावका

नहीं, वह तो अच्छा ही होता
गिरते हुए सितारे की तरह मरना...

लूकाश

बस!
(लाड़-प्यार करते हुए बोलता है)
नहीं करनी हैं ऐसी बातें! मत कहो!
कुछ बोलो मत!.. नहीं, तुम बोलती जाओ!
तुम्हारी बातें हैं अद्भुत

पर दिल को इतनी प्यारी लग रही हैं...
चुप क्यों हो? रुठ गई हो क्या?

मावका

तुम्हारी बातें सुन रही हूँ...
तुम्हारे प्यार की बातें...

(हाथों में उसका सिर लेकर और चांदनी की ओर मोड़कर ध्यान से उसकी आँखों में देखती है)

लूकाश

यह किसलिए? डर लग रहा है
तुम दिल में जिस प्रकार निगाह चुभा रही हो...
मुझसे नहीं यह हो सकता! कुछ बोलो,
विनोद करो, कुछ पूछो, हँस दो, करो प्यार की बातें...

मावका

तुम्हारा स्वर है स्वच्छ झरने की भांति,
पर आँखें पारदर्शी नहीं हैं...

लूकाश

चांदनी पर्याप्त नहीं है शायद।

मावका

शायद...

(उसके सीने से कान लगाकर सन्न हो जाती है)

लूकाश

कहीं बेहोश नहीं हुई हो?

मावका

चुप! हृदय की धड़कनों को बोलने दो...
वसंत के पवन के प्रकार अस्पष्ट हैं इनकी बातें।

लूकाश

इतने भी ध्यान से क्या सुनना है? छोड़ो!

मावका

छोड़ने को कह रहे हो प्रियतम? फिर छोड़ती हूँ।
छोड़ती हूँ मेरी जान! नहीं सुनूंगी प्रिय!
नहीं सुनूंगी, मेरे दिल के सुख!
बस लाड़ बरसाऊंगी अपने प्रियतम पर!
प्रेम के इस खेल की आदत है तुम्हें?

लूकाश

जनम से प्यार किसी से न किया है।
पता भी था नहीं कि प्यार है इतना मीठा!

मावका कामुकता से उसको लाड़ दे रही है, वह सुख की पीड़ा से चीख उठता है।

मावका! तुम मेरी आत्मा निकाल लोगी!

मावका

अवश्य निकाल लूंगी!
अपनाऊंगी तेरी सुरीली आत्मा
और दिल को बातों के जादू में फंसा लूंगी...
रह जाऊंगी मैं चूमती प्यारे होंठ

कि ये शर्माएँ व चमकें
जंगली गुलाब के फूलों के प्रकार!
मैं नीली आँखें आकर्षित रखूंगी
ताकि वे खेलें व झलकें,
रत्नों की भांति किरणें बरसाएँ!
(अचानक ताली बजा लेती है)
पर प्यारी आँखें कैसे अभिभूत रखूँ!
अभी तक फूलों से नहीं सजी हूँ मैं!

लूकाश
वह कोई बात नहीं है!
तुम फूलों के बिना भी सुंदर हो!

वैश्विक हिंदी परिवार

मावका
नहीं, तेरे लिए मुझे ढंग से सजना है,
कि वन की राजकुमारी लग सकूँ!
(मैदान के दूसरे किनारे दौड़ी जाती है, झील से दूर, खिलती झाड़ियों की ओर)

लूकाश
रुको! मैं खुद सजाऊंगा तुम्हें।
(उस के पास चला आता है)

मावका
(उदास होकर)
फूल रात को इतने सुंदर नहीं होते...
रंग सारे सो गए हैं...

लूकाश

यहाँ घास में दीपकीट हैं, इन को लेकर
चमका दूंगा तुम्हारे बाल,
ये तारों के सेहरे की भांति होंगे।
(कई दीपकीट उसके बालों में रखता है)
अब देखने दो... कितनी तुम प्यारी हो!
(सुख से होश खोकर उस को बाहों में थाम लेता है)
और एकत्र करने हैं। तुम को
हीरों से जैसे राजकुमारी को सजाऊँ मैं!
(झाड़ियों के नीचे और दीपकीट ढूँढने लगता है)

मावका

मैं स्नोबाल से तोड़ लेती हूँ कुछ फूल।
यह ऐसे भी नहीं है सोई,
इसे बुलबुल सोने भी कहाँ देगा।
(सफेद फूल तोड़कर अपने कपड़े सजाती है)

जलपरी

(फिर से कोहरे में से निकलती है। सरपत की ओर मुड़कर फुसफुसाती है)
हे बच्चो-पोतेर्चाता,
अपने दीपक जला दो!

सरपत में दो घूमते हुए दीपक झलक उठते हैं। पोतेर्चाता निकल आते हैं, उनके हाथों में झिलमिलाते हुए दीपक हैं जो कभी तेज़ जल उठते हैं तो कभी बिल्कुल बुझ जाते हैं। जलपरी उन को अपने से लगाकर दूर झाड़ियों के बीच अंधेरे में दिखते हुए लूकाश के अकेले छायाचित्र की ओर इशारा करते हुए फुसफुसाती है।

देख जो भटक रहा है उधर

वह तेरे बाप जैसा है
तुझे गया जो छोड़कर,
बरबाद कर तेरी माँ को।
नहीं वह जीने योग्य है।

पहला पोतेर्चा
डुबा दो पानी में!

जलपरी
नहीं डुबा सकती, मना किया वनराज ने।

दूसरा पोतेर्चा
हम से भी नहीं होगा, छोटे हैं हम।

जलपरी
तुम छोटे हो, हलके हो,
चमकीले दीप पकड़े हो,
झाड़ों में ऐसे जा सकते हो
वनराज को न सुनाई दे।
और यदि देख लिया है
बुझाना दीपक बस!
दलदल की ओर ले जाओ उसका पथ -
जहाँ वह पैर रखेगा, वहीं नीचे उतरेगा
दलदल के तल तक... आगे का देखूंगी!
चलो अब तुम! चमक-चमक!

पोतेर्चाता

(चल पड़ते हुए एक दूसरे से)
तुम इधर से, मैं उधर से,
मिलते हैं जल के ऊपर!

जलपरी *(प्रसन्न होकर)*
चल पड़े!
(दलदल के पास दौड़ी आकर अपने कंधों के पीछे की ओर उंग्लियों से पानी छिड़कती है। झाड़ों के पीछे से कुत्स उछल आता है, एक जवान पिशाच-सेठ)
कुत्स-कुत्स, हाथ मेरा चूम!
(घमंड के साथ उसकी ओर हाथ बढ़ा देती है, वह चूमता है)

कुत्स
वह क्यों महोदया?

जलपरी
तेरे लिए बनानेवाली हूँ मैं सुंदर नाश्ता,
गँवाना मत।
(दूर खड़े लूकाश की ओर इशारा करती है)
देखा? कैसा? है आदी तू इस भोजन का?

कुत्स
(उपेक्षा से हाथ हिलाकर)
जब तक दलदल में वह नहीं है,
नहीं है पानी मेरे मुंह में!

जलपरी
तेरा ही होगा वह लड़का,
तेरी माँ-नानी भी प्रसन्न रहेंगी!

कुत्स झाड़ों के पीछे कूदकर अदृश्य हो जाता है। जलपरी सरपत में पोतेर्चाता को निहारती है जो झिलमिलाते दीपकों के साथ इधर-उधर दौड़ रहे हैं।

लूकाश

(दीपकीटों को ढूँढते हुए उन दीपकों को देख लेता है)

कितने हैं सुंदर वे उड़ते हुए दीपकीट!

कभी ऐसे न देखे हैं! बड़े हैं!

मुझे है पाना उन को!

(उन को पकड़ने दौड़ता है, वे धीरे-धीरे उस को दलदल की ओर ले जाते हैं)

मावका

मत भागो उन के पीछे! प्रियतम, मत भागो!

वे पोतेर्चाता हैं! मृत्यु के पथ ले जा रहे हैं!

दीपकों का पीछा करते करते जोश में आये लूकाश को उसकी बात नहीं सुनाई देती है, वह दौड़ते दौड़ते मावका से दूर चला जाता है।

लूकाश

(अचानक चीख उठता है)

बाप रे! मैं मर गया!

फंसा दलदल में! नीचे खिंच रहा हूँ!

उसकी चीख सुनकर मावका दौड़ी आती है परंतु उस तक नहीं पहुंच सकती है क्योंकि वह कड़ी मिट्टी से दूर फंसा है। मावका अपने कमरबंद का एक छोर पकड़कर दूसरा छोर उसकी ओर फेंकती है।

मावका

पकड़ो!

कमरबंद लूकाश के हाथ तक नहीं पहुंचता है।

लूकाश

नहीं पकड़ सकता! यह क्या होगा!

मावका

(नम्रा के पेड़ के पास लपक जाती है जो दलदल के ऊपर झुककर खड़ा है)

बचा दो, नम्रा माँ!

(गिलहरी की भांति तीव्र नम्रा पर चढ़ जाती है, सब से दूर टहनियों पर उतरती है और फिर कमरबंद फेंकती है - इस बार वह पहुंच जाता है और लूकाश उसका छोर पकड़ लेता है। मावका उस को अपनी ओर खींच लेती है, फिर हाथ देकर नम्रा पर चढ़ने में उसकी सहायता करती है)

सरपत में जलपरी निराशा की धीमी कराहट निकालकर कोहरे में लुप्त हो जाती है। पोतेर्चाता भी अदृश्य हो जाते हैं।

लेव मामा

(चीख से जागकर)

हें? क्या हुआ? फिर से कोई भूतनी?

तेरी तो... दूर हो जा!

(चारों ओर देखता है)

लूकाश तुम किधर हो? होए!

लूकाश

(नम्रा से जवाब देता है)

इधर हूँ मामा!

लेव

तुम इधर क्यों?

(पास आता है और नम्रा के ऊपर देखता है)

नम्रा पर चढ़ गए हो, वह भी छोकरी के साथ!

लूकाश नम्रा से उतरता है, मावका ऊपर रह जाती है।

लूकाश
हे मामा! मैं दलदल में फंस गया था,
मरने ही वाला था और उस ने
(मावका की ओर इशारा करता है)
बचा दिया न जाने कैसे।

लेव
पर इधर क्यों भटक रहे थे
भूत की भांति? वह भी रात को?

लूकाश
दीपकीटों को पकड़ रहा था...
(रुक जाता है)

लेव
(मावका पर सजाए हुए दीपकीटों पर नज़र डालकर)
अच्छा! तो ऐसा बोलो तब मैं जानूँ!
पता चला है अब यह किस का काम है।

मावका
मैं ने इसे बचा दिया है मामा।

लेव
अरे, मामा बुलाती है! यह कौनसी भांजी!
(डांटते हुए सिर हिलाता है)
हे जंगली गिरोह! यह है तुम्हारा सच!

अच्छा, देखता हूँ मैं वनराज को,
नहीं बचेगा - बांज के ठूँठ में
कास दूंगा बढ़िया सी उसकी दाढ़ी,
पता चल जाएगा उसे! इन कामों के लिए
भेजता है छोकरियों को और खुद
जैसै अज्ञात हो!

मावका
(शीघ्र नम्रा से उतर जाती है)
नहीं, निर्दोष है वह! पड़े दंड नागिन-रानी का
मुझ पर यदि यह झूठ है!
मैं भी निर्दोष हूँ!

लेव
अब मानता हूँ, मुझे पता है
कि इधर यह कितनी बड़ी शपथ है।

लूकाश
इसी ने तो बचा दिया है मामा,
इस के बिना मर जाता मैं, कसम से!

लेव
ठीक है लड़की, तुम में नहीं है मानवी आत्मा
किंतु अच्छे दिलवाली हो ज़रूर।
क्षमा करना, गर्म होकर मैं ने तो
बुरा-भला कहा था।
(लूकाश से)

तुम दीपकीटों को पकड़ते हुए
दलदल में भागे क्यों?
वहाँ वे थोड़े ही बैठते हैं।

लूकाश
वे कोई दूसरे थे, उड़ते हुए!

लेव
अच्छा! समझ गया हूँ! पोतेर्चाता!
ठीक है, कल मैं पिल्लों को लाऊंगा यहाँ
फिर देखते हैं कि किस की चीख उठेगी!

पोतेर्चाता के स्वर
(मेंढकों की दर्राहट की भांति मर्मस्पर्शी आ रहे हैं)
नहीं, नहीं, हे दादा!
नहीं, नहीं, निर्दोष हैं हम!
दलदल में बेरियाँ एकत्र हम कर रहे थे,
पता नहीं था
इधर आए हैं मेहमान,
पता होता तो हम
नहीं आते ऊपर गहराई से...
बाप रे, यह कैसा दुख है! रो लो भाई, रो लो!

लेव
देखो, दुष्ट जोड़ा कैसा चिंतित हो उठा है,
चुड़ेलों के पट्ठे! रहने भी दो,
पता मैं कर ही लूंगा किसका दोष है!..

(लूकाश से)
क्यों भांजे, आ गया समय,
चलते हैं घर आराम से।
(मावका से)
मिलेंगे फिर लड़की!

मावका
कल आ रहे हैं? मैं दिखाऊँ
मकान बनाने के लिए सही लकड़ी।

लेव
लगता है तुम ने सब पता किया है।
तीव्र हो! ठीक है, आओ, तुम लोगों की तो
आदत है मुझे, और तुम को भी
हमारी आदत डालनी होगी।
चलते हैं। नमस्ते।
(चल पड़ता है)

मावका
(लेव की तुलना में अधिक लूकाश को संबोधित करते हुए)
प्रतीक्षा मैं करूंगी!

लूकाश मामा से पीछे रहकर चुपचाप मावका के दोनों हाथ थाम लेता है, ध्वनिहीन रूप से उसको चूम लेता है, फिर मामा के पीछे दौड़कर उस के साथ वन में चला जाता है।

मावका
(अकेली)
हे रात, काश तुम शीघ्र ही बीत जाती!

क्षमा करना प्यारी! मैं जानती नहीं थी पहले
कि आएगा दिन ऐसा सुख से भरा
तुम्हारी ही भांति, रात मेरी चमकीली!
बर्च बहन, क्यों इतनी उदास हो?
देखो मुझे, मैं हूँ कितनी सुखी!
जल में गिराना मत आँसू नम्रा माँ,
साथ मेरे होगा मेरा प्रियतम!
पिता जी, अंधेरे उपवन,
मैं कैसे इस रात को बिताऊँ?
रात लंबी है नहीं पर जुदाई लंबी है...
मेरे भाग्य में क्या होगा - आनंद या दुख?

चांद वन की अंधेरी दीवार के पीछे छिप गया, मैदान में अंधेरा छा गया, काला व मखमल की तरह। कुछ दिखाई देना बंद हो गया, केवल अलाव के बचे हुए चिंगारे धीमे-धीमे चमक रहे हैं तथा दीपकीटों के सेहरे से पता चल रहा है कि मावका पेड़ों के बीच घूम रही है; वह सेहरा कभी पूरे नक्षत्र की भांति चमक उठता है तो कभी अलग-अलग चिंगारियों से, आखिर वह भी अंधेरे से ढंक जाता है। आधीरात का गहरा सन्नाटा, बस कभी-कभी उपवन में पवन का हलका स्वर सुनाई देता है मानो नींद में भरी आह।

अंक 2

गर्मियों के अंतिम दिन। उपवन के गहरे फीके रंग के पत्तों पर कहीं न कहीं शरद की पीली झलक दिखाई देती है। झील उथली हो गई है, तट की पट्टी चौड़ी हो गई है, सरपत के अघन पत्तों की सूखी सरसराहट सुनाई देती है।

मैदान पर मकान बना हुआ है, शाक-सब्ज़ी का बगीचा लगा है। एक खेत में गेहूँ है, दूसरे में रई। झील पर हंस तैर रहे हैं। तट पर कपड़े सूख रहे हैं, झाड़ों पर मटके व सुराहियाँ चढ़ाई हुई हैं। मैदान की घास साफ़ काटी हुई है, वन से घंटियों की आवाज़ आती है - उधर मवेशी चर रहे हैं। कहीं पास से मुरली का स्वर आता है, जोश से भरा नाचनेवाला राग (राग 11, 12, 13)।

लूकाश की माँ
(घर से निकलकर बुलाती है)
हे लूकाश! किधर हो?

लूकाश
(हाथों में मुरली और एक नक्काशीदार डंडा लिए वन से निकलता है)
इधर हूँ माँ।

माँ
कितना बजाओगे मुरली?
यही बस सूझता है और काम रुका रहे!
लूकाश
कौनसा काम?

माँ
कौनसा काम - मतलब?
अहाता कौन था बनानेवाला?

लूकाश
आप रहने दीजिए, बना ही दूंगा मैं।

माँ

कब तक रहने देती रहूँ?
तुम्हारा काम है बस झाड़ों में घूमना
उस अजनबी दुराग्रही के साथ!

लूकाश
मैं घूमता थोड़े ही हूँ - चराता हूँ मवेशी,
और मावका तो सहायता करती है।

माँ
उसकी सहायता की बात तुम मत करो!

लूकाश
आपने तो स्वयं ही कहा था
कि जब वह गायों की देखभाल करती है
बढ़ जाता है दूध का उत्पादन।

माँ
डाइन है - इसलिए!

लूकाश
आपके संतुष्ट हो जाने के लिए
किया क्या जाए - ऊपरवाला जाने!
हम जब मकान बना रहे थे
वन से नहीं थी लाती वह लकड़ी?
बगीचे में सब्ज़ी लगाई आप के साथ
और खेत में बोया किस ने?

इस वर्ष जैसी कभी फ़सल हुई थी?
और खिड़कियों के नीचे फूल लगाए -
देखने से दिल झूम जाता है!

माँ

उन फूलों की आवश्यकता है क्या?
विवाह की उम्र की लड़की थोड़े ही है घर में...
बस फूल और गाना सूझते हैं इसे!
लूकाश अधीरता से कंधे उचकाकर जाने लगता है।
कहाँ?

लूकाश

बनाता हूँ अहाता!

(मकान के पीछे चला जाता है, थोड़ी देर बाद वहाँ से लकड़ी पर कुल्हाड़ी मारने का स्वर आता है)

खुले बाल और शानदार ढंग से फूलों से सजी मावका वन से निकलती है।

माँ *(अस्नेह से)*

क्या काम है तुम को?

मावका

किधर है लूकाश?

माँ

तुम पीछे क्यों पड़ी रहती हो? लड़के के पीछे
ऐसे पड़ना लड़की को शोभा नहीं देता।

मावका
मुझे किसी ने यह नहीं बताया।

माँ
तो फिर सुन लो एक बार - आएगा काम।
(डांट की दृष्टि से मावका को देखती है)
बाल खोलकर घूम रही हो क्यों?
सजना-संवारना आता ही नहीं,
चुड़ेल की भांति भटकती है।
अच्छा नहीं लगता। ये क्या कपड़े हैं तुम पर?
ये काम करते समय नहीं जंचेंगे।
मेरी गुज़री हुई लड़की के कुछ कपड़े बचे हैं -
घर में टंगे हैं, जाकर पहन लो।
और ये अपने कपड़े संदूक में डालकर आओ।

मावका
कपड़े बदल सकती हूँ, कोई बात नहीं है।
(मकान में जाती है। वहाँ से लेव मामा निकल आता है)

माँ
धन्यवाद करके भी जा सकती थी!

लेव
लड़की को डांटती क्यों रहती हो बहन?
उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा?

माँ

तुम्हारी बात जब उठती ही नहीं भैया,
तब चुप रहा करो - यही सही है!
वन की सभी डाइनों को भी यहाँ ले आते।

लेव

तुम ऐसी कोई बात करती जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान हो
तो शायद सुन भी लेता मैं पर ऐसे...
"वन की डाइनों को" - वन में डाइनें मिलती कहाँ हैं?
डाइनें तो गाँवों में रहती हैं...

माँ

हाँ, तुम विद्‍वान हो इस विषय में...
ठीक है, निमंत्रित करते जाओ
वन की दुष्ट जातियों को, देखना फिर
कि होगा क्या भला!

लेव

क्यों नहीं होगा? होगा।
जो वन का है बुरा नहीं है बहन,
धन राशि वन से आती है।

माँ

(उपहासपूर्वक)
अवश्य!

लेव

और इस प्रकार की लड़कियाँ

मानव भी बन सकती हैं, जानती हो?

माँ

मानव कैसे बनेंगी? पिए हुए हो क्या?

लेव

तुम जानती कुछ नहीं हो! स्वर्गीय दादा
कहते थे कि बस ऐसे शब्द का ज्ञान हो
तो वन की प्राणी में
हमारी जैसी आत्मा आ सकती है।

माँ

और डाइन की आत्मा जाएगी कहाँ?

लेव

फिर हो गई शुरू!
इस से अच्छा मैं काम करने चलता हूँ,
यहाँ बकवास करने से कोई लाभ नहीं है!

माँ

मैं ने मना किया भी कब? तुम जाओ!

क्रोध में सिर हिलाकर लेव मकान के पीछे चला जाता है। मावका कपड़े बदली घर से निकलती है। उस पर क्षीण बनावट की कमीज़ है, कंधों पर पैवंद लगे हुए हैं, लिनेन का तंग पेटीकोट और फीका हुआ पेशबंद; उसके बाल चिकने प्रकार से संवारे हुए और दो चोटियों के रूप में सिर पर बांधे हुए हैं।

मावका

बदल चुकी हूँ।

माँ
हाँ, यह तो कुछ बात हुई है।
फिर मैं चलती हूँ चूजों को खिलाने।
तागा भी कातना था शुरू करना
पर और काम है बाकि
जो तुम संभालोगी कहाँ...

मावका
वह क्यों? जो मेरे वस में है
उस से सहायता करने में मैं प्रसन्न रहती हूँ।

माँ
यही तो बात है कि तुम्हारे वस में कम है।
ठीक से काम करनेवाली तुम कहाँ हो?
सिरदर्द हुआ था न जब घास एकत्र करना था?
दरांती भी इसी प्रकार चलाओगी तो फिर...

मावका
(डरकर)
दरांती? कैसे?
आप चाहती हैं कि आज मैं फ़सल काटूँ?

माँ
हाँ, क्यों नहीं! आज कोई त्योहार थोड़े ही है!
(ड्योढ़ी के दरवाज़े के पीछे से दरांती निकालकर मावका को पकड़ाती है)

यह लो दरांती - काटकर देखो।
मैं अपना काम करके फिर आती हूँ।

(दानों से भरी रकाबी लेकर मकान के पीछे चली जाती है। थोड़ी देर बाद उसका स्वर आता है: "किट-किट-किट!")

कुल्हाड़ी लिए लूकाश निकलता है और एक जवान हार्नबीम के पेड़ के पास आता है उस को काटने के लिए।

मावका

मत काटो प्रियतम,
तुम देख सकते हो कि कच्चा है यह।

लूकाश

तुम छोड़ो न! समय नहीं है!

मावका दुखी होकर उसकी आँखों में देखती है।

तो कोई सूखा फिर ला दो...

मावका

(शीघ्र ही वन से एक बड़ी सूखी लकड़ी लेकर आती है)

और लेकर आती हूँ। कितना चाहिए और?

लूकाश

बहुत! अहाता इस अकेले से नहीं बनेगा।

मावका

न जोने क्यों तुम भी मुझ से नाराज़ हो...

लूकाश

वह... माँ बस डांटती हैं तुम्हारे कारण!..

मावका
क्या चाहती हैं? और उन से क्या मतलब?

लूकाश
वह कैसे? बेटा हूँ मैं उनका...

मावका
तो क्या हुआ कि बेटे हो?

लूकाश
देखो... तुम जैसी उनके मन में है नहीं बहू...
वन के निवासियों से प्यार नहीं है उन को...
तुम्हारे लिए वे नहीं बनेंगी अच्छी सास!

मावका
हमारे वन में कोई सासें होती ही नहीं।
वे सासें, बहुएँ हैं किसलिए -
समझ में नहीं आता!

लूकाश
उन्हें सहायता के लिए बहू की है ज़रूरत -
बड़ी हुई है उनकी आयु।
किसी पराई को तो नहीं लगा सकती है काम में...
और कोई नौकरानी थोड़े ही बनेगी बेटी जैसी...
पर सच है, तुम नहीं समझोगी...
हमारी मानवी समस्याएँ वह कहाँ समझे
जो वन में ही बड़ा हुआ है।

मावका

(दिल से)

तो समझा दो, मैं समझ लूंगी,
क्योंकि मैं प्यार करती हूँ तुम से...
तेरी मुरली के सारे राग समझ लिए हैं मैं ने।

लूकाश

राग! वह है नहीं कोई बड़ी विध्या!

मावका

अपने हृदय के प्रस्फुटन को छोटा मत समझो,
उसी से प्रेम हमारा हो उठा है!
वह फर्न के पुष्पण से भी मोहक है -
रत्नों को खोलता वह नहीं, बनाता है।
मेरे दिल का तो मानो पुनर्जन्म हुआ है
जब से उस को पहचाना। उस क्षण में
चमकीला चमत्कार हुआ...
(अचानक रुकती है)
तुम हँस रहे हो?

लूकाश

सच में, हँसी तो आ गई...
कपड़े पहने मज़दूरिन के
और भाषण दे रही है मानो
त्योहार पर कोई नेता!
(हँसता है)

मावका

(अपने कपड़े खींचती है)

जला दूंगी यह सब!

लूकाश

कि माँ और ज़्यादा डांटें?

मावका

तो क्या करूँ? जब से पहने हैं मैं ने ये कपड़े
तुम्हारा व्यवहार बदल गया है!

लूकाश

अच्छा! मुझे पता था!
शुरू हो जाएंगे अब तिरस्कार...

मावका

नहीं प्रियतम, तिरस्कार नहीं है,
मुझे इस बात का केवल दुख है
कि अपने जीवन को नहीं बना सकते हो
तुम अपने योग्य।

लूकाश

क्या बोलती हो, समझ में कुछ न आया।

मावका

तुम में उसी वस्तु से सर्वाधिक मैं प्रेम करती हूँ
जो स्वयं तुम अभी समझे नहीं हो,

जब कि तुम्हारा हृदय गाता है उसी पर
मुरली के शुद्ध तथा स्नेहपूर्ण स्वर से...

लूकाश

वह क्या है ऐसा?

मावका

तुम्हारी प्यारी सुंदरता से भी वह सुंदर है,
किंतु इस को प्रकट करना शब्दों में
मेरे लिए भी असंभव है...

(कुछ देर तक दुख व स्नेह से उस को देखती रहती है)

मुरली बजाओ मेरे लिए प्रियतम,
वह जादू डालेगी सारी कष्टों पर!

लूकाश

मुरली बजाने का समय अभी नहीं है!

मावका

फिर बाहों में ले लो मुझे कि मैं
भूल जाऊँ इन सब बातों को!

लूकाश

(पीछे देखकर)

चुप! सुन लेंगी माँ!
ऐसे भी वे तुम्हें चिपकू कहती है...

मावका

(जल उठकर)

हाँ! तुम लोगों में जो न हुआ बड़ा
कहाँ तुम्हें समझेगा! “चिपक गई” का अर्थ है क्या?
कि मैं ने तुम से प्यार किया है?
कि मैं पहली थी जिस ने यह कहा था?
यह कोई शर्म की बात है क्या
कि मेरा दिल कंजूस नहीं है
और न छिपाता है अपने रत्नों को,
बस उपहार में उन को दे दिया है
अपने प्रियतम को, बदले में कुछ न मांगकर?

लूकाश
आशा रही होगी कि चुकाऊंगा कभी।

मावका
फिर से विचित्र शब्द समझ में नहीं आया -
“चुकाऊंगा”... तुम ने मुझे तो ऐसा भेंट दिया है
जो दिल में था, मैं ने वही किया है।
उन भेंटों को किसी ने न गिना, न नापा है...

लूकाश
तो फिर अच्छा है कि किसी पर
किसी का ऋण नहीं रहा है,
याद रखना - तुम ही ने यह कहा है।

मावका

मैं किसलिए यह याद रखूँ ?

माँ

(मकान के पीछे से निकल आती है)
अच्छा! तुम ऐसे काट रही हो?
तुम भी अहाता ऐसे ही बना रहे हो?

लूकाश जल्दी लकड़ी को मकान के पीछे खींचकर ले गया।

तुम्हारा मन फसल जब काटने का नहीं है
तो मैं कहाँ तुम्हें विवश करती हूँ?
अकेली फिर संभालूंगी मैं काम।
और शरद में बहू आएगी कोई
मेरी सहायता के लिए।
एक है विध्वा बहुत फुर्तीली -
स्वयं लोगों से पूछ रही थी
लूकाश के बारे में। मैं ने कहा
कि कोई आपति नहीं है... ठीक है, बेटी,
दे दो दरांती - दूसरा है नहीं।

मावका

मैं काटूंगी। आप जाइये तागा कातने।

माँ मैदान को पार करके झील की ओर चली जाती है और सरपत के पीछे अदृश्य हो जाती है। मावका हाथ घुमाकर रई को दरांती से काटने जा रही है। अचानक रई में से खेतपरी निकल आती है। उसके लंबे से खुले स्वर्ण के रंग के बालों के बीच में से कहीं न कहीं उसके छोटे शरीर पर पहने हरे रंग के कपड़े झलकते दिखाई देते है। सिर पर नीले फूलों का सेहरा; बालों में गुलाबी रंग के कुछ फूल और हरी घास लगी हुई है।

खेतपरी

(प्रार्थनापूर्वक मावका की ओर लपक जाती है)

कृपा करो बहन!
मेरे सौंदर्य को मत मारो!

मावका

मुझे करना है यह।

खेतपरी

मैं ऐसे भी लुटी हुई हूँ,
सब मेरे फूल उड़े हैं
जो तारों के प्रकार चमक रहे थे
गेहूँ में से वे सब उखड़े हैं!
चिंगारे के प्रकार खसखस का फूल
खिला था लाल सा,
वह काला हो गया है अब
हल रेखा में पड़े बहे रक्त के प्रकार...

मावका

मुझे करना ही है बहन! तुम्हारा सौंदर्य
और बढ़िया खिलेगा अगले वर्ष,
और मेरा सुख यदि अभी सूखकर झुका
तो फिर उठेगा ही नहीं!

खेतपरी

(हाथ ऊपर उठाकर हवा में गेहूँ की बाली की भांति हिल रही है)

सर्वनाश! हे मेरी चोटी

स्वर्ण के रंग की!
दुर्भाग्य है! हे मेरे सौंदर्य
युवावस्था के!

मावका
तुम्हारे सौंदर्य के भाग्य में लंबी उमर नहीं है,
वह तो गिरने ही के लिए उगता है।
और यह तुम्हारी प्रार्थना है बेकार,
मैं न भी काटूँ, कोई और काट ही देगा।

खेतपरी
देखो बहन, खेत के एक छोर से दूसरे तक
कैसे है घूम रही लहर।
हमारे सुख की जन्नत को
कुछ और रहने दो,
जब तक चमक रही है धूप,
जब तक रई नहीं कटी है,
जो अपरिहार्य है वह आने में तो देर है!
एक मिनट! बस एक मिनट!
एक छण दो मेरी प्यारी!
फिर मेरी यह छवि बेचारी खुद झुककर
गिर जाएगी धरती पर...
बहन! उस शिशिर की तरह मत होना तुम
जो प्रार्थनाएँ सुनता नहीं किसी की!

मावका

तुम्हारी इस इच्छा को पूरी होने देने में
प्रसन्न मैं भी रहती किंतु स्वयं की भी इच्छा को
पूरी करने में अब स्वतंत्र नहीं रही हूँ।

खेतपरी

(मावका के कंधे तक झुककर फुसफुसाती है)
क्या ऐसा नहीं होता है कभी कि खेत में
तीक्षण दरांती से कट जाए हाथ?
बहन! दया करो मेरे इस दुख पर!
रक्त के एक बूंद से बस मेरा हो पाएगा बचाव।
क्यों? सौंदर्य रक्त बहाने योग्य है न?

मावका

(दरांती से अपना हाथ चीर जाती है, रक्त खेतपरी के स्वर्ण-केश पर छिड़कता है)
यह लो, चमक उठो बहन!

खेतपरी धन्यवाद देते हुए झुककर मावका का प्राणाम करती है, फिर रई में अदृश्य हो जाती है।

झील की ओर से माँ आ रही दिखाई देती है। उस के साथ एक जवान, स्वस्थ दिखनेवाली महिला है जिस के सिर पर कढ़ाई से सजा लाल रूमाल बांधा हुआ है, इसी प्रकार सजा हुआ गहरे लाल रंग का स्कर्ट, हरा पेशबंद जिस पर सफ़ेद, लाल तथा पीले पट्टे लगे हैं, कमीज़ पर लाल और नीले रंग की धनी कढ़ाई। मोटी गोरी गर्दन पर हार के झुमके झनझना रहे हैं; मज़बूत कमरबंद कसकर बांधा हुआ है जिस से उसका हृष्ट-पुष्ट शरीर और शानदार लगता है। महिला की चाल इतनी ऊर्जस्वी है कि बुढ़िया को दम लगाकर तीव्र चलना पड़ रहा है।

माँ

(स्नेह से महिला को संबोधित करते हुए)
आइये, किलीना, बर्च के पास,

ये पौधे अभी हरे हैं। यह उबालकर
भाप का प्रयोग इलाज में हो सकता है।
और इस से गाय का दूध बढ़ेगा।

किलीना
दूध की कोई कमी नहीं है!
अब मेला लगनेवाला है, कुछ बर्तन थे खरीदने।
और मेरी गाय अच्छी नसल की है -
उस को मेरे स्वर्गीय पति ने जाने किधर से खरीदा।
बहुत दूध देती है!
अब खेत में जब समाप्त हुआ है काम
तो घर का काम संभालने का समय है।
विध्वा का काम तो दोगुना बढ़ता है काकी!
(ओंठ खींचकर कष्ट से दबी लगने की कोशिश करती है)

माँ
अरी तो आप ने खेत में काम समाप्त किया है?
यही तो होता है जब कोई मेहनती है
और ताकत से भरा... हमारा खेत तो छोटा है,
फिर भी नहीं संभाल सकते हैं...

किलीना
(खेत की ओर देखती है जहाँ मावका खड़ी है)
वह आपकी काटनेवाली कौन है?

माँ

वह एक अनाथ है...
(धीमे से)
नहीं है किसी काम की...

किलीना
(माँ के साथ मावका के पास आ जाती है)
हे छोकरी, नमस्ते! काम कैसे चल रहा है?

माँ
(ताली बजाकर)
हे मेरे बाप! इस ने तो आरंभ तक नहीं किया है!
दुर्भाग्य है! क्या कर रही थी इतनी देर?
आलसी! बेकार! नालायक!

मावका
(धीमे से)
हाथ कट गया था...

माँ
क्यों नहीं कटता!

किलीना
मुझे दे दो दरांती, मैं करती हूँ।

मावका दरांती पीठ के पीछे छुपाकर किलीना को शत्रुता की निगाह से देखती है।

माँ
सुना नहीं? दे दो दरांती! तुम्हारा थोड़े ही है!

मावका के हाथों से दरांती छीनकर किलीना को पकड़ा देती है, वह रई पर टूट पड़कर काटने लग जाती है मानो आग जल रही हो, केवल गिरते हुए भूसे का स्वर सुनाई देता है।

माँ
(संतुष्ट होकर)
इसी को काम कहते हैं!

किलीना
(काम जारी रखते हुए)
जब पूले बांधनेवाला कोई हो
काट डालूंगी मैं एक झटके से पूरा खेत।

माँ
(बुलाती है)
लूकाश! आ जाओ इधर!

लूकाश
(आकर किलीना से)
भगवान सहयोग करे।

किलीना
(रई काटते हुए)
धन्य हो।

माँ
लूकाश, काम बाँटो इन महोदया के साथ
पूले बांधकर। वह सहायता करनेवाली

घायल भी हो चुकी है।
लूकाश पूले बांधने लगता है।
ठीक है बच्चो, लगे रहो, और मैं चलती हूँ,
बनाऊंगी कुछ नाश्ते के लिए।
(मकान में चली जाती है)

मावका बर्च के पास जाकर और उस से लिपटकर उसकी लंबी टहनियों में से फसल काटनेवालों को देखती है।

किलीना कुछ देर तक उतनी ही फुरती के साथ रई काटती है, फिर सीधी खड़ी होकर पूलों के ऊपर झुके हुए लूकाश को देखती है, मुस्कुराती है, तीन बड़े कदमों से उछलकर उस के पास आती है और ज़ोर से उसकी पीठ पर हथेली मारती है।

किलीना
हे युवक, थोड़े तेज़ हो जाओ!
घोंघे की भांति रेंग रहे हो,
कामचोर कहीं के!
(ज़ोर से हँसती है)

लूकाश
(भी सीधा खड़ा हो जाता है)
कितनी फुर्तीली हो! ऐसे मत छेड़ो,
कुश्ती लड़कर लिटा सकता हूँ!

किलीना
(दरांती फेंककर हाथ कमर पर रख लेती है)
अच्छा! फिर कौन हारेगा - यह देखना है?

लूकाश उस पर झपट जाता है, वह उसके हाथ पकड़ती है, हथेलियों से हथेलियाँ लगाकर दोनों शक्ति तोल रहे हैं। कुछ देर तक दोनों की शक्ति बराबर लगती है, फिर किलीना बनावट की हँसी के साथ आँखें लड़ाती हुई थोड़ी पीछे हट

जाती है; लूकाश जोश में आकर उसके हाथ फैलाकर उसका चुंबन लेना चाहता है, परंतु जैसे ही उनके होंठ मिलनेवाले हैं किलीना पैर से उडंगा मारकर लूकाश को गिरा देती है।

किलीना

(उस के पास खड़ी होकर हँसती है)

क्यों? फिर कौन जीता? मैं नहीं?

लूकाश

(ज़ोर से साँस लेते हुए उठता है)

ऐसे गिराना कोई बड़ी बात नहीं है!

किलीना

अच्छा?

मकान के दरवाज़े के खोलने की आवाज़ आती है। किलीना शीघ्र फिर काटने लग गई और लूकाश पूले बांधने। जल्द ही खेत में रई की जगह केवल खूंटी व पूले रह जाते हैं; बस थोड़ी काटी रई पड़ी है जो अभी पूलों में बांधना बाकी है।

माँ

(ड्योढ़ी से)

हे लुनेरो! नाश्ते का समय है।

किलीना

मेरा तो हो गया है काम।

लूकाश नहीं कर पाया पूरा।

लूकाश

बस थोड़ा बाकी है।

माँ

फिर पूरा करके आओ।

और आप किलीना आइये जल्दी!

किलीना मकान में चली जाती है। दरवाज़ा बंद हो जाता है। मावका बर्च के पास से निकल आती है।

लूकाश

(उस को देखकर थोड़ा घबरा गया पर तुरंत संभल गया)

अरी तुम हो? यह लो, बांध दो ये पूले

जो बाकी हैं, और मैं चलता हूँ।

मावका

नहीं मैं बांध सकती।

लूकाश

तो क्या फिर देखने आई हो

मदद नहीं करनी है तो?

(स्वयं बांधता है)

मावका

लूकाश, वह महिला पुन: न आए तो अच्छा हो।

मुझे पसंद नहीं है वह -

चतुर है उदबिलाव की भांति।

लूकाश

थोड़े ही जानती हो उसे तुम।

मावका

मैं जानती हूँ! सुनी है
उसकी हँसी और उसका स्वर।

लूकाश

इतना पर्याप्त नहीं है।

मावका

नहीं, पर्याप्त है। वनविडाल की भांति
यह महिला है हिंसक।

लूकाश

तो फिर?

मावका

हमारे वन में वह न आए - बेहतर होगा।

लूकाश

(सीधा खड़ा होकर)

तुम कब से वन की रानी बन गई हो
कि आने के लिए अनुमति चाहिए तुम से?

मावका

(दुख और धमकी से)

वन में ऐसे कगार मिलते हैं
जो सूखी टहनियों से हैं ढंके,
न जानवर, न मनुष्य उन को देख सकता है
जब तक न गिर पड़े उन में...

लूकाश

अच्छा! फिर हिंसकता व चतुरता की बात करती हो -
इस से अच्छा होता कि चुप रहती!
समझ में आया अब कि जाना ही नहीं था
तुम्हारा यह स्वभाव।

मावका

संभवत: मैं ने स्वयं ही
इसे नहीं था जाना...

लूकाश

तो फिर सुनो, अगर यहाँ
पूछना पड़े मुझे तुम से
कि कौन इधर आए या न आए,
तो बेहतर कि मैं स्वयं वन से
फिर गाँव में चला जाऊंगा रहने।
किसी प्रकार संभाल सकूंगा अपना काम
साथ रहकर मनुष्यों के।
तुम्हारे पास नहीं रहूंगा बैठा
जाल में फंसाए लोमड़े के प्रकार।

मावका

मैं ने कभी न कोई जाल बिछाया था।
अपनी इच्छा से आ गए हो तुम।

लूकाश

स्वेच्छा से ही कभी भी जा सकता हूँ,
कोई मुझे नहीं रखेगा बांधकर!

मावका
भला कभी प्रयास किया है मैं ने
तुम्हें बांध लेने का?

लूकाश
तो फिर किस बात पर सारा यह बकवास?

अंतिम पूला बांधकर मावका की ओर देखे बिना मकान में चला गया। मावका खेत के किनारे बैठकर दुखद सोच में पड़ गई।

लेव मामा
(मकान के पीछे से आते हुए)
तुम क्यों दुखी हो बेटी?

मावका
(धीमे, उदासी से)
गर्मी समाप्त होने आई है काका...

लेव
हाँ, तुम्हारे लिए दुख की बात है।
मैं ने सोचा था कि इस बार शिशिर जब आएगा
तुम्हें नम्रा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

मावका
फिर मैं कहाँ रहूँ?

लेव

जहाँ तक मेरी राय है तो इस गृह में
तुम्हारे लिए स्थान कम न पड़ता...
पर मेरी बहन का स्वभाव तो ऐसा है
कि उस से बात करनी भी असंभव है...
कितने प्रयास किए हैं मैं ने...
यहाँ का स्वामी होता मैं तो पूछता भी नहीं,
पर ये धरती व गृह मैं ने इन्हें दिए हैं,
यहाँ तो मेरा अब चलता नहीं।
मैं स्वयं जाऊंगा शिशिर बिताने गाँव में
उधर है मेरा घर... तुम अगर गाँव में रह सकती
तो मैं तुम्हें ठहरा भी लेता।

मावका

नहीं, नहीं मैं रह सकती... मैं आती अन्यथा।
आप काका तो अच्छे हैं।

लेव

अच्छा तो ब्रेड होता है लड़की, न कि मनुष्य।
पर सच है कि तुम्हारी जंगली जाति से
दिल लग गया है मेरा। मरते वक्त
पशु की भांति आऊंगा इस वन में।
धंसाया जाऊंगा इस बांज के नीचे...
हे बांज, क्या तुम खड़े रह पाओगे उस वक्त
हिल जाएगा जब मेरा सिर सफ़ेद?
कहाँ रहोगे! और बड़े थे बांज के पेड़

पर वे भी कट गए... हरे रहो,
मेरे घुंघराले बालोंवाले मित्र, जाड़े तक कम से कम
और फिर... बस ऊपरवाला जाने कि अगला वसंत
हम से देखा जाएगा कि नहीं...
(डंडे का सहारा लेकर दुखद मौन में खड़ा है)

मावका काटी हुई रई में से धीरे से आधे सुखे फूल निकालते हुए उनकी एक छोटी सी पूली बनाती है।

मकान से माँ, किलीना तथा लूकाश निकलते हैं।

माँ *(किलीना से)*
जल्दी किस बात की है?और थोड़ा बैठें न?

किलीना
नहीं काकी, मैं जाती हूँ।
अब शाम भी होने आई है, रास्ते में डर लगेगा।

माँ
लूकाश, तुम छोड़कर आओ।

लूकाश
हाँ, क्यों नहीं।

किलीना
(उस को देखते हुए)
काम भी तो बाकी होगा कोई...

माँ
शाम के समय अब कौनसा काम?

तुम जाओ बेटे, जाओ,
किलीना को रास्ते तक छोड़कर आओ।
इस जंगल में अकेली घूमने में है कौनसा आनंद?
इन जैसी सुंदर नारी को कोई पकड़ न ले!

किलीना
यह तो बिल्कुल डरा दिया है आप ने काकी!
चलो लूकाश, जब तक अंधेरा नहीं छाया,
नहीं तो दोनों को फिर डर लगेगा!

लूकाश
मुझे और वन में डर? अरी!
इतनी भी मत करो निंदा!

माँ
लड़का मेरा बहुत सही है,
किलीना जी, आप इसका आत्मसम्मान रखें!

किलीना
नहीं, मज़ाक किया था मैं ने...
(लेव को देखती है)
अरे! लेव काका! घर पर हैं?

लेव *(बात न सुन पाने का दिखावा करता है)*
हें? ठीक है, जाइये, नमस्ते!

(वन में चला जाता है)

किलीना

चलती हूँ काकी, नमस्ते!

(बुढ़िया का हाथ पकड़कर चूमना चाहती है, पर वह हाथ खींचकर तथा पेशबंद से मुंह पोंछकर रिवाज के अनुसार किलीना को तीन बार गालों पर चूमती है)

किलीना *(चलती हुई)*

प्रसन्न रहें आप और याद किया करें हमें!

माँ

आप भी प्रसन्न रहें और आती रहिये!

(मकान में चली जाती है और अपने पीछे द्‌वार बंद करती है)

मावका उठती है और धीमी थकी सी चाल से झील के पास आकर झुके हुए नम्रा के पेड़ पर बैठ जाती है तथा हाथों पर सिर रखकर धीमे से रोने लगती है। छोटी वर्षा गिरने लगती है और मानो घने जाल से मैदान, गृह तथा उपवन को ढांक देती है।

जलपरी

(तट के पास तैर आकर आश्चर्य तथा उत्सुकता से मावका को देखती है)

तुम रो रही हो मावका?

मावका

तुम भी कभी तो रोई होगी जलपरी?

जलपरी

होए! मैं! एक मिनट अगर रोऊँ मैं
किसी को फिर इतना हँसना पड़ेगा
कि चली जाए जान!

मावका
हे जलपरी! तुम्हें कभी नहीं हुआ है प्यार...

जलपरी
मुझे नहीं हुआ है? नहीं, तुम भूल गई हो
कि कैसा होना चाहिये सच्चा प्यार!
प्यार जल की भांति है बहता व तीव्र,
लाड़ देता, खेलता, तोड़ता, खींचता और डुबाता है।
जहाँ है आग - वह उबलता है,
जब आए ठंड, पत्थर जैसा जम जाता है।
यही है मेरा प्यार! और वह तुम्हारा -
वह सूखे घास की चेतना का अस्वस्थ बच्चा है।
हवा से हिलकर पैरों में पड़ जाता है।
चिंगारा आए - वह बिना संघर्ष किए जलेगा।
और फिर रह जाएगी बस उसकी काली राख।
जब नीच की भांति वह उपेक्षित हो -
बेकार निराशा के ठंडे जल में
कटी हुई घास के प्रकार सड़ता है,
देर से आए पछतावे की वर्षा में।

मावका
(सिर उठाकर)
तुम ने कहा पछतावे? तुम बर्च से पूछो
कि है उसे उन रातों का पछतावा
वसंत के पवन ने जब खोली उसकी लंबी चोटी?
जलपरी

फिर क्यों दुखी है वह?

मावका

क्योंकि अपने लंबे शाखों से प्रियतम को
हमेशा के लिए दिल से नहीं लगा सकती।

जलपरी

क्यों?

मावका

क्योंकि उसका प्रियतम है वसंत का पवन।

जलपरी

फिर क्यों उससे किया था प्यार?

मावका

वह स्नेहमयी था, वह वसंत का पवन,
गाते हुए उसके पत्ते लहराए थे,
उसका सेहरा खोला था लाड़ से
और प्यार से उसकी चोटी गीली की थी ओस से...
हाँ, हाँ... सच्चा वह था वसंत का पवन,
पर किसी और से प्यार नहीं करती वह।

जलपरी

तो अब खड़ी रहे धरती तक अपना दुख लटकाकर,
वह पवन और नहीं लगेगा उसके दिल -
चला गया है वह।

(धीमे से, बिना पानी का स्वर सुनाई पड़े, तट से तैरकर चली जाती है और झील में अदृश्य हो जाती है)

मावका फिर से बैठकर झुक गई, लंबे काले बाल धरती पर गिर गए। धूसर रंग के बादलों को चलाते हुए पवन चलने लगता है, उस के साथ पक्षियों के झुंड दक्षिण की ओर उड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। फिर पवन के एक तीव्र झोंके से वर्षा के बादल बिखर जाते हैं और सुर्यास्त से पहले के गहरे नीले रंग के अंबर की पृष्ठभूमि पर शरद के रंगीले वस्त्र पहना हुआ वन दिखाई देता है।

मावका
(धीमे से, गहरे दुख के साथ)
हाँ, चला गया है वह...

वनराज झाड़ों से निकलता है। वह पुराने सोने के जैसे रंग का लंबा स्वीता पहना है जिसके नीचेवाले किनारे पर गहरे लाल रंग की झालर है, उसकी टोपी पर हाप के पके हुए पौधे की पट्टी लिपटी है।

वनराज
हे बेटी, भोग रही हो दंड कितना बड़ा
अपने तुम विश्वासघात का!..

मावका
(सिर उठाकर)
पर किसका विश्वासघात किया है मैं ने?

वनराज
अपना। ऊपर की डालियों को छोड़कर
तुम नीचे छोटी राहों पर उतर गई।
स्वयं को देखो! तुम लगती हो
कोई मज़दूरिन, नौकरानी जिस ने चाहा

भारी मेहनत करके थोड़ा सुख पाना,
पर वह नहीं हो पाया। बस बची लज्जा के कारण
भिखारिन वह नहीं बनी है अब तक।
अब याद करो तुम कैसी थी उस रात
तुम्हारा प्यार जब खिल उठा ही था।
तुम वन की राजकुमारी जैसी थी
पहनी हुई सितारों का सेहरा -
तब स्वयं सुख तुम्हारी ओर
उपहार लिए जोश में बढ़ा रहा था हाथ!

मावका
फिर क्या करूँ? सेहरे में ही नहीं,
दिल में भी सारे तारे बुझ गए हैं।

वनराज
तेरे लिए सभी सेहरे नहीं मरे हैं।
अपने आसपास देख लो ज़रा, कैसा त्योहार है इधर!
ऐश वृक्ष ने स्वर्ण के रंग के वस्त्र पहने हैं,
जंगली गुलाब ने भारी हार पहन लिया है।
जिस स्नोबाल से सजा करती थी तुम
और जिस में बुलबुल ब्याह के गीत गाया करता था -
उसकी निर्दोष पीड़ा से बन गया जामुनी गौरव।
बूढ़ी नम्रा, यहाँ तक कि वह बर्च उदास भी,
सब ने ये बढ़िया कपड़े पहने हैं
शरद के उत्सव के लिए। बस तुम अकेली हो
जो छोड़ना नहीं चाहती ये भिखारिन के चिथड़े,

तुम भूल गई कि कोई भी निराशा
जीत जाए सौंदर्य से - वह सही नहीं है।

मावका

(झटके से उठती है)

उत्सव के वस्त्र फिर दे दो मुझ को दादा!
मैं फिर बनूंगी वन की राजकुमारी जैसी
और सुख पड़ेगा मेरे पाँव
करता मेरी कृपा की प्रार्थना!

वनराज

बेटी, कब से तैयार हैं वस्त्र राजकुमारी के लिए,
पर वह सनकी थी खेलने में लगी
मज़ाक के नाते एक भिखारिन बनकर।

अपना स्वीता खोलकर उसके नीचे छुपा हुआ सोने से सजा किरमिजी रंग का कपड़ा व चांदी का मुकुट निकालता है, वह कपड़ा मावका के कपड़ों के ऊपर पहना देता है। मावका स्नोबाल के पास जाकर और जल्दी उसके लाल बेरियों के कई गुच्छे तोड़कर अपने लिए एक सेहरा बनाती है, फिर अपने बाल खोलकर वह सेहरा पहनती है और वनराज के सामने झुक जाती है - वह उसके सिर पर चांदी का मुकुट पहना देता है।

वनराज

बस अब इतनी नहीं रही मुझे चिंता तुम्हारी।

(आदर से उसकी ओर सिर झुकाकर तीव्र चाल से झाड़ों में जाकर अदृश्य हो जाता है) **वन से पेरेलेस्निक दौड़ आता है।**

मावका

तुम फिर से?

(भागना चाहती है)

पेरेलेस्निक

(उपेक्षा से)

डरना नहीं, तुम से मिलने नहीं मैं आया हूँ।
रई की खेतपरी से चाहता था मिलना।
किंतु वह सो चुकी है। खेद की बात है...
और तुम कुछ अस्वस्थ लग रही हो।

मावका

बस लग रहा है तुम को!

पेरेलेस्निक

अच्छा? थोड़ा सा पास से देखने दो।
(उस के निकट आता है, मावका हट जाती है)
क्यों डर गई हो? जानता हूँ,
सगाई तेरी हो गई है, छेड़ूंगा नहीं।

मावका

तुम दिल्लगी उड़ाओगे? हट जाओ!

पेरेलेस्निक

क्रोध न करना, भूल हो गई है मुझ से...
एक बात सुन मावका, क्यों नहीं
बनूँ मैं तेरा भाई?

मावका

तुम?

पेरेलेस्निक

क्या व्यवधान है? शरद आ गई है,
अब सूरज भी पड़ा है शीतल,
हमारा रक्त भी हो गया ठंडा।
कभी हम मित्र थे, फिर प्रेम हुआ
या केवल खेल था - अब कहना कठिन है,
पर भाइचारे का समय अब आ गया है। दे दो हाथ।

मावका थोड़े अनिश्चय से उस को हाथ देती है।

अब इस तुम्हारे रंग खोये चेहरे का
भाई को तुम एक चुंबन लेने दो।

(मावका हटने का प्रयास करती है पर वह फिर भी उसका चुंबन लेता है)

अब इस चेहरे पर मानो खिल उठे हैं फूल!
शरद के फूल - विनम्र व सुगंधहीन...

(उसके हाथ पकड़ रखे मैदान के इर्द-गिर्द निगाह घुमाता है)

देखो, मकड़ी का जाल
हवा में उड़कर मंडरा रहा है...
हम भी इसी प्रकार...

(अचानक उसको नृत्य में घुमाने लगता है)

इसी प्रकार हम नाचें, हम स्वयं भी मंडराएँ!
तारे चमकीले, चिंगारियाँ स्वर्ण की
उज्जवल, शुद्ध व सुंदर झलकें।
जो कुछ झलकता है, जो कुछ उछलता है,
निरंतर गति का जो कुछ है दीवाना!
मैं भी उसी भांति... मैं भी उसी भांति...
चिंगारी की भांति तू भी बन प्रिया!

नाच की गति बढ़ती जा रही है। मावका के चांदी के मुकुट की पट्टी खुलकर चमकीले सर्प के प्रकार ऊपर की ओर लहकता है, काले बाल बिखर गए और पेरेलेस्निक के लाल घुंघराले बालों से उलझ गए।

मावका

बस!.. बस भी करो!

पेरेलेस्निक

दिलों के संगम में एक छण के लिए भी
रुकना मत प्रिया!
सुख एक विश्वासघात है - उसी में है आनंद,
यही इसका जादू है - नित्य उड़ान!

नाच पागलपन की सीमा तक तीव्र होने लगती है।

चलो हम उड़ें! चलो हम जुड़ें!
आंधी जैसे घूमें! जिएँ!
अपना स्वर्ग चमकीला यहीं बना लें!

मावका

बस! छोड़ो मुझे... हो रही हूँ बेहोश... मर रही हूँ...

(उसका सिर पेरेलेस्निक के कंधे पर गिरता है, हाथ नीचे उतरते हैं, पेरेलेस्निक उसके बेहोश शरीर को पकड़े नाचता जा रहा है)

अचानक धरती के नीचे से अंधेरा, चौड़ा तथा डरावना मृत्यु का भूत निकल आता है।

मृत्यु

मेरा मुझे दे दो। छोड़ो इसे।

पेरेलेस्निक

(रुककर अपनी बाहें खोलता है, मावका बेहोशी में घास पर उतर जाती है)

तुम कौन हो?

मृत्यु

मुझे तुम नहीं जानते?
"चट्टान में रहनेवाला" हूँ मैं।

पेरेलेस्निक थरथराकर व तीव्रता से भागकर वन में अदृश्य हो गया। मावका होश में आई और थोड़ा उठकर आतंक से भूत को देख रही है जो हाथ आगे बढ़ाकर उसको लेने आ रहा है।

मावका

नहीं, मैं नहीं चाहती!
तुम्हारे साथ नहीं मैं जाना चाहती! जीवित हूँ!

चट्टान में रहनेवाला

मैं उस अनजाने देश ले जाऊंगा तुम्हें
जहाँ अंधेरा सूना जल
मरी हुई आँखों की भांति सो रहा है,
और मौन चट्टानें ऊपर हैं खड़ी
मरी हुई घटनाओं के साक्षी की भांति।
वह शांत है, नहीं आती सनसनाहट
पेड़-पौधे की, कोई सपना भी पैदा नहीं होता
वह विश्वासघाती जिस से
कटती है नींद; न पवन लेकर आता
अगम्य मुक्ति का कोई गीत;

वहाँ जलता है न कोई अगन।
तीव्र बिजलियाँ टूट जाती हैं
चट्टानों से टकराकर
और शांत अंधेरे आश्रम में
पहुंच न पाती।
ले जाऊंगा तुम्हें, वहीं तुम्हारा घर है :
गति से तुम बेहोश हो जाती हो, प्रकाश से फीकी।
छाया में है तुम्हारा सुख, नहीं हो जीवित तुम।

मावका

(उठकर)
नहीं! मैं जीवित हूँ! तथा सदा रहूंगी!
मेरे हृदय में वह है जो नहीं मरता।

चट्टान में रहनेवाला

तुम्हें पता है कैसे?

मावका

पता है, क्योंकि अपने दुख से
मैं प्यार करके उसे रखती हूँ जीवित।
यदि मैं इसको भूलना चाह सकती -
तुम्हारे साथ चलती, किंतु संसार में
ऐसी कोई शक्ति नहीं है
जो मुझको भूलने की इच्छा दिलाए।

वन में से मनुष्य की आहट का स्वर आता है।

वह आ रहा है जिस ने दे दिया मुझे यह दुख!
हट जाओ, मृत्यु! मेरी आशा आ रही है!

"चट्टान में रहनेवाला" अंधेरे झाड़ों में हटकर वहाँ छुप जाता है।

वन में से लूकाश निकल आता है। मावका सामने आती है। रंगीले वस्त्रों की तुलना में उसके चेहरे का रंग मौत की हद तक उतरा हुआ लग रहा है, मरती हुई आशा से उसकी बड़ी काली आँखें और विशाल हो गई हैं, उसकी गतियाँ झटकेदार व अधूरे लग रहे हैं मानो उस में कुछ टूट रहा हो।

लूकाश

(उस को देखकर)

कितनी भयानक हो! क्या चाहती हो मुझ से?

(मकान की ओर तीव्रता से चलकर द्वार पर खटखटाता है, माँ खोलती है पर बाहर नहीं आती। लूकाश द्वार पर माँ से)

बरेखियों के लिए ब्रेड पकाइये माँ,

ब्याह के प्रस्ताव के साथ कल जाएंगे किलीना के यहाँ!

(मकान के अंदर जाता है, द्वार बंद हो जाता है। "चट्टान में रहनेवाला" निकलकर मावका की ओर बढ़ता है)

मावका

(झटके से अपना सुंदर किरमिजी रंग का वस्त्र उतार लेती है)

ले लो मुझे! मैं भूलना चाहती हूँ!

"चट्टान में रहनेवाला" उसको छू लेता हो, मावका चीखकर उसकी गोद में गिर जाती है, वह उस पर अपना काला शाल ढांक देता है। दोनों धरती के अंदर उतर जाते हैं।

अंक 3

शरद की मेघमय एवं वायुमय रात। चंद्रमा की अंतिम पीली किरण ऊपर की नंगी टहनियों के जाल में बुझ रही है। कराहट या हँसी जैसा उल्लुओं का

चिल्लाना सुनाई देता है, रात की छोटी चिड़ियाँ भी आवाज़ दे रही हैं। अचानक इस सब के ऊपर भेड़िये की लंबी चीख ढंक जाती है जो बढ़ती जाकर अचानक कट जाती है। सन्नाटा छा जाता है।

गहरी शरद के बीमार से सूर्योदय का आरंभ होता है। राख के रंग के अंबर की पृष्ठभूमि पर पेड़ों के पत्ते खोया हुआ वन काले शूक की भांति हलका सा हिल रहा है। वन के किनारे बिखरा हुआ अंधेरा भटक रहा है। लूकाश के मकान की श्वेत दीवारें दिखाई देने लगती हैं, एक दीवार के पास किसी मनुष्य का काला छायाचित्र दिख रहा है, वह शक्तिहीनता से दीवार से उठंगकर खड़ा है। उस में कठिनाई से मावका पहचानी जा सकती है। वह काले वस्त्र एवं धूसर अपारदर्शी परदा पहनी है, केवल सीने पर स्नोबाल की बेरियों का लाल सा गुच्छा दिख रहा है।

जब अंधेरा हटता है मैदान पर एक बड़ा ठूंठ दिखने लगता है जहाँ पहले सैकड़ों वर्ष पुराना बांज का पेड़ खड़ा था और उस के पास एक नई कब्र जिस पर घास भी न उगने पाई है।

वन में से धूसर रंग का स्वीता व भेड़िये की छाल की बनी टोपी पहने वनराज निकल आता है।

वनराज

(मकान से उठंगे छायाचित्र को ध्यान से देखते हुए)

तुम हो बेटी?

मावका

(उसकी ओर थोड़ी बढ़कर)

मैं हूँ।

वनराज

“चट्टान में रहनेवाले” ने तुम्हें छोड़ा है कैसे?

मावका

तुम ने मुझे छुड़वा दिया अपने अपराध से।

वनराज

तुम उस बदले को क्यों अपराध कहती हो?
न्यायपूर्ण बदले को जो लिया है मैं ने
तुम्हारे विश्वासघाती प्रेमी से?
क्या न्याय नहीं है यह कि जान लिया है उस ने
अकेलेपन असीमित व निराशा
भेड़िये के रूप में वन में भटकते हुए?
हाँ! आधा भेड़िया है वह अब, राक्षस!
अब भूंके, रोए, चीखे
प्यासा रहे मानव के रक्त का -
नहीं बुझा सकेगा अपनी यातना!

मावका

इतने प्रसन्न मत होना क्यों कि
मैं ने उसे बचा लिया है।
खोज पाई दिल में एक जादुई शब्द
जो जानवर बने लोगों को
मानव का रूप लौटाता है।

वनराज

(क्रोध से धरती पर पाँव मारकर कड़क से अपना डंडा तोड़ लेता है)

नहीं हो योग्य तुम वन की पुत्री कहलाने!
तुम में वन की मुक्त प्राणी की नहीं है आत्मा,
मकान की दासी की है!

मावका

ओह! तुम जानते हो नहीं
कि कैसे भय से मैं गुज़री हूँ...
पत्थर की नींद में पड़ गई थी मैं
उस काली, नम, गहरी, ठंडी गुफ़ा में
जब उसका विकृत स्वर पहुंच गया चट्टानों के आर-पार
और भेड़िये की वह लंबी, उदास, भयानक चीख
मरे हुए अंधेरे जल में छा गई,
जिस से वह प्रतिध्वनि जाग उठी
जो कब से मृत पड़ी थी पत्थरों में...
फिर जागी मैं। भूमि के आंतरिक अगन की भांति
मेरी तीव्र पीड़ा ने गुफ़ा का मौन तोड़ दिया
और पुन: मैं प्रकट हुई संसार में। एक शब्द ने
मौन होंठों को फिर जीवित कर दिया
और मैं कर बैठी जादू... फिर समझ गई
कि मेरे भाग्य में विस्मरण है नहीं।

वनराज

तो अब कहाँ है वह? तुम्हारे साथ वह क्यों नहीं है?
क्या उसकी अकृतज्ञता भी उतनी ही अमर है
जितना तुम्हारा प्रेम?

मावका

दादा! काश तुम ने देखा होता!
मानव-रूप लेकर पड़ गया वह मेरे पैरों में
काटे हुए एश वृक्ष की भांति...

और नीचे से ऊपर की ओर
पीड़ा भरी निगाह उठाई जिस में बस दुख था,
आशाहीन तथा तीव्र पछतावा...
बस एक मनुष्य है जो ऐसे देख सकता है!..
मैं बोल भी कुछ न पाई थी कि उठ गया वह
और अपना मुंह छुपाया मुझ से कांपते हुए हाथों से,
फिर कुछ कहे बिना वह भाग खड़ा हुआ
और श्यामकंट के झाड़ों में खो गया वह मेरी दृष्टि से।

वनराज
अब क्या करोगी तुम?

मावका
पता नहीं... अब छाया के प्रकार
इस गृह के पास भटक रही हूँ...
नहीं है मेरे बस में छोड़कर जाना...
मेरे हृदय को अनुभव है कि वह फिर
लौट आएगा यहाँ...

वनराज मौन में दुख से सिर हिलाता है। मावका फिर दीवार से उठंग जाती है।

वनराज
बेचारी बेटी, हम को छोड़कर
दुखदायक दुनिया में क्यों गई थी?
अपने उपवन में क्या विश्राम नहीं मिलता?
नम्रा तुम्हारी तो प्रतीक्षा कर रही है,
कब से बनाया बिस्तर है उस ने,
उदास भी हो रही है कि नहीं तुम आ रही हो इतनी देर।

जाकर विश्राम कर लो।

मावका *(धीमे से)*

नहीं मैं कर सकती हूँ दादा।

वनराज ज़ोर से आह भरकर धीरे से वन में चला गया। वन में से घोड़े की टाप का स्वर आता है मानो कोई पागल की भांति घोड़े को दौड़ा रहा हो, फिर रुक जाता है।

कुत्स

(मकान के पीछे से हाथ रगड़ते हुए उछलकर आता है और मावका को देखकर रुक जाता है)

यहाँ हो मावका?

मावका

तुम क्यों भटक रहे हो इधर?

कुत्स

मैं इनका घोड़ा वापस लाया हूँ घुड़साल में[7]।
बहुत अच्छा उस ने मुझे घुमाया,
दौड़-दौड़कर गिर गया,
अब और न घुमाएगा किसी को!

मावका

घिनौना! तू ने हमारे वन की नाक कटा दी है!
लेव काका के साथ जो तेरा समझौता था

[7] मिथकों के अनुसार कुत्स जैसे पिशाच रात के समय घोड़ों को चुराकर दौड़ाते हैं ताकि दिन के समय वे थके होकर काम के यौग्य न रहें.

ऐसे निभाता है उसे?

कुत्स
उसी के साथ समझौता मर गया।

मावका
वह कैसे? मर गया है लेव?

कुत्स
वह कब्र हैं।
गाड़ा गया था बांज के पेड़ के नीचे
पर ठूंठ के पास लेटे रहना पड़ा बूढ़े को।

मावका
दोनों ही मर गए... उस को पूर्वाभास था
कि इस शिशिर तक वह नहीं रहेगा...
(कब्र के निकट आती है)
कितना दिल मेरा रो रहा है
आप के लिए, मेरे इकलौते मित्र!
मेरे आँसू अब जीवनदायक होते
उनको टपका मैं देती इस धरती पर,
इस कब्र पर अमर पुष्प उगाने के लिए।
मगर निर्धन हूँ, अब यह मेरा दुख
केवल मरे पत्ते की भांति गिर सकता है...

कुत्स
सहानुभूति मुझे शोभा नहीं देती

पर मानना ही पड़ेगा - तरस आता है मुझको
इस बूढ़े पर, आता था उसको समझौता निभाना।
घोड़ों के साथ काला बकरा रखा करता था
कि मैं उस पर सवार होकर घूमा करूँ।
बकरे को मैं दौड़ाता था और घोड़े
खड़े थे शांति से घुड़साल में।
इन महिलाओं को तो कुछ भी नहीं आता,
हमारे साथ नहीं जमती है इनकी -
बकरे को बेच दिया, बांज को कटवा दिया।
समझौता टूट गया, फिर मैं ने
अच्छा बदला लिया है इन से।
अच्छे से घोड़े को जान से दौड़ा दिया है,
नये खरीदेंगे - दौड़ाऊंगा फिर से।
एक डाइन से फिर कहा है मैं ने
कि इनकी गायों पर कुदृष्टि डाले।
जलराज ने इनका भूसा गीला कर दिया है,
पोतेर्चाता ने सड़ा दिये हैं बीज।
झील को गंदा करने के फलस्वरूप
अब ये बुरी तरह बीमार पड़ी हैं।
भला नहीं होगा इन के लिए इस वन में!
दरिद्रता के भूत अब घूम रहे हैं
इस गृह के चारों ओर।

ज़्लीद्नि (दरिद्रता के भूत)

(छोटे, दुर्बल, फटे हुए कपड़े पहने प्राणी मकान के पीछे से निकल आते हैं, जिन के चेहरों पर सताती हुई नित्य भूख की छाप दिखाई देती है)

हम इधर हैं! किस ने हमें बुलाया?

मावका
(उनकी राह रोकने के लिए द्वार की ओर लपक जाती है)
हो जाओ दूर! विलीन हो जाओ!
किसी ने न बुलाया है तुम्हें!

एक भूत
मुंह से जब नाम निकल गया
तो वापस नहीं जा सकते हैं हम।

ज़्लीद्नि
(मकान की ड्योढ़ी घेर लेते हैं)
हमारे लिए द्वार जल्दी खुले, हम भूखे हैं!

मावका
मैं अंदर नहीं जाने दूंगी!

ज़्लीद्नि
तो फिर तुम ही हमें खिलाओ!

मावका
(आतंक से)
मेरे पास तो कुछ नहीं है...

ज़्लीद्नि
स्नोबाल की बेरियाँ जो दिल के पास रखती हो!

वह दो हमें!

मावका

यह मेरा रक्त है!

ज़्लीद्नि

तो क्या हुआ? हमें पसंद है रक्त।

एक भूत मावका के सीने पर लटककर स्नोबाल की बेरियाँ चूसने लगता है, बाकि उस को खींच रहे हैं ताकि खुद भी चख सकें, आपस में कुत्तों की तरह गुर्राते हुए लड़ते हैं।

कुत्स

हे ज़्लीद्नि, मानव यह नहीं है, छोड़ दो इसे!

ज़्लीद्नि रुक जाते हैं भूख से दांत पीसते हुए और सीटी बजाते हुए।

ज़्लीद्नि

(कुत्स से)

तो तुम हमें दिलाओ खाना,
वरना खा जाएंगे तुम्हें!

(कुत्स पर झपट लेते हैं, वह उछलकर पीछे हट जाता है)

कुत्स

अबे, संभलके!

ज़्लीद्नि

खाना! हम भूखे हैं!

कुत्स

रुको ज़रा, जगाता हूँ स्त्रियों को -
मिलेगा तुम को खाना और मुझको मनोरंजन।

(धरती का ढेला उठाकर खिड़की में फेंक देता है, शीशा टूट जाता है)

लूकाश की माँ की आवाज़

(मकान में)

अरे! यह क्या है? फिर से कोई भूत-प्रेत!

कुत्स

(ज़्लीद्नि से फुसफुसाकर)

वह जाग गई है, देखो। बुलाएगी तुम्हें जल्दी।
चुपचाप से बैठो तब तक, नहीं तो
ऐसा लगेगा शाप इस बुढ़िया का
कि जाओगे धरती के नीचे - आता है उसे।

ज़्लीद्नि ड्योढ़ी के पास एक काली ढेर बनकर प्रतीक्षा करने लगते हैं। टूटे हुए शीशे से माँ के उठने की आवाज़ और फिर उसकी किलीना से बातचीत सुनाई देती हैं।

माँ की आवाज़

होए, प्रकाश भी आया है और यह
अभी तक सो रही है।
किलीना! हे किलीना! क्या नींद है इसकी!
भगवान करे कि न खुले भी... उठो!
उठो! काश न उठ पाती तू!

किलीना की आवाज़

(नींद से जागकर)
क्या हुआ?

माँ
(व्यंग से)
समय आया है गाय दुहने का,
वह बढ़िया दूधवाली गाय जो तुम को
स्वर्गीय पति ने लाकर दे दिया था।

किलीना
(नींद से पूरी तरह जागकर)
वे गाएँ जाऊंगी दुहने जो ससुराल में आकर पाईं।
दूध के तीन बूंद तो मिल ही जाएंगे -
उस से मक्खन बनेगा...

माँ
चुप भी रहेगी न कभी!
वह किसका दोष है कि गाय ने
दूध देना बंद किया है? ऐसी माल्किन है...
बाप रे! यह क्या बहू मुझे मिली है!
किस पाप का दंड बनकर तू मेरे सिर पर चढ़ गई?

किलीना
मुझे अपने घर लाने को किस ने विवश किया था?
मुझ से पहले तो आई थी यहाँ कोई दरिद्र।
उसको ठीक से सजा-पहनाकर घर में लेते,

अच्छी बहू बन जाती वह!

माँ

तुम्हें लगता है कि नहीं बनती? बिल्कुल बन जाती!
मूर्ख है लूकाश कि उसको छोड़कर तुमको लेकर आया।
वह थी इतनी विनम्र व नेक -
यदि लगाओ घाव से तो भरेगा...
उसको दरिद्र कहती हो और स्वयं
उसके हरे कपड़े से ड्रेस बनाकर पहनती हो।
आती नहीं लज्जा!

किलीना

आपके यहाँ नये कपड़े कहाँ मिलेंगे!..
पति पता नहीं कहाँ भटक रहा है,
मैं इधर बैठी हूँ दुष्ट सास के साथ -
ऐसे ही छोड़ी - न पत्नी हूँ न विधवा!

माँ

कैसा पति तुम्हारे साथ रह पाता?
तुम संकट हो इस घर का! जो कुछ था -
सब खा गई अपने बच्चों के साथ!
ये देखो बैठे हैं! बैठ जाएँ ऐसे ही
तुम्हारे सिर पर ज़्लीद्नि!

किलीना

उसी पर बैठें वे जिस ने उन्हें बुलाया!

यह कहकर घर का द्‌वार खोलती है। कुत्स दलदल की ओर भाग जाता है। ज़्लीद्‌नि लपककर मकान के अंदर घुस जाते हैं।

किलीना हाथ में बाल्टी लिए तीव्रता से जंगली दरिया की ओर दौड़ती है, गरज की आवाज़ के साथ बाल्टी में पानी भर लेती है और वापस थोड़ी धीमी चाल से आने लगती है। द्‌वार के पास मावका को देख लेती है जो मुंह पर धूसर परदा उतारकर दीवार से उठंगी दुर्बल खड़ी है।

किलीना

(रुककर और बाल्टी धरती पर रखकर)

यह कौन है? सुनो, कुछ पी लिया है क्या?

या ठंड लगी है?

(मावका के कंधे को हिलाती है)

मावका

(मुश्किल से, मानो बड़े थकान से लड़ रही हो)

निद्रा मुझ पर चढ़ी है... शिशिर की निद्रा...

किलीना

(उसके मुंह से परदा हटाकर पहचान लेती है)

यहाँ क्यों आई हो? काम का हिसाब

चुकाना बाकी है क्या?

मावका

(पहले जैसे)

मेरा हिसाब कोई नहीं चुका सकता।

किलीना

किस से मिलना है? वह यहाँ नहीं है,

मुझे पता है - उस से मिलने आई है!
सच-सच बता, वह तेरा प्रेमी है?

मावका

पहले प्रभात हुआ था उज्वल, सुख-भरा,
अब जैसा वह नहीं था... मर गया...

किलीना

पागल है!

मावका

स्वतंत्र हूँ, स्वतंत्र...
धीमे से बादल नभ में तैर रहा है,
अलक्ष्य, उदास व अप्रसन्न...
कहाँ है वह नीली बिजली?

किलीना

(उसका हाथ खींचकर)
हट! दिमाग खराब मत कर! खड़ी है क्यों यहाँ?

मावका

(थोड़ा होश में आकर, द्वार से हटते हुए)
आप लोगों का सुख देख रही हूँ खड़ी होकर।

किलीना

तो जादू में खड़ी रहना फिर!

मावका अचानक सूखी पत्तियोंवाले तथा नीचे उतरी टहनियोंवाले नम्रा के पेड़ का रूप धारण कर लेती है।

किलीना
(होश संभालकर, शत्रुता से)
यह लो! अच्छे समय पर बोली मैं!
अब देखते हैं कितनी खड़ी रहेगी!

बच्चा
(मकान से दौड़कर आता है, किलीना से)
मम्मी, कहाँ हैं आप? हम भूखे हैं,
दादी नहीं खिलाती!

किलीना
मत परेशान करो!
(धीमे से, उस के निकट झुककर)
भट्ठी के नीचे मैं ने पाई छुपा रखी है -
जब दादी बाहर जाए तब खा लेना।

बच्चा
आपने यहाँ नम्रा का सूखा पेड़ लगाया किसलिए?

किलीना
तुम्हें सब से मतलब!

बच्चा
मुरली बनाऊंगा मैं इस से।

किलीना

जो इच्छा!

बच्चा नम्रा की एक टहनी काटकर मकान में वापस चला जाता है।

वन में से लूकाश निकल आता है, पतला, लंबे बालोंवाला, टोपी व स्वीता खोया हुआ।

किलीना

(उसको देखकर प्रसन्नता से चीख लेती है पर शीघ्र ही उसकी प्रसन्नता का स्थान नाराज़गी लेती है)

आ ही गया आखिर! कहाँ भटके इतना समय?

लूकाश

मत पूछो!

किलीना

और ऊपर से "मत पूछो"!
पता नहीं किस दुनिया घूम-फिरकर आए
और मैं न पूछूँ?
हे सज्जन, पूछने की आवश्यकता भी है कहाँ?
कहीं तो होगी इस पृथ्वी पर मधुशाला
जहाँ स्वीता और टोपी छोड़कर आए हो!

लूकाश

मधुशाला से नहीं मैं आ रहा...

किलीना

अब कौन मूर्ख विश्वास करेगा!
(ऊंचा विलाप करने लगती है)

हमेशा के लिए अब डूब गई हूँ मैं
इस पियक्कड़ के साथ!

लूकाश
तुम चुप रहो! मत पिपियाओ!
उसको भय के साथ देखकर किलीना रुक जाती है।
अब मैं कुछ पूछता हूँ तुम से!
मामा का बांज कहाँ है
कि दिख रहा है केवल ठूंठ?

किलीना
(पहले घबरा गई पर तुरंत संभल गई)
हमें यहाँ भूखे मरना था क्या?
खरीदनेवाले आए और खरीद लिया - ख़तम।
उस बांज में क्या विशेष था!

लूकाश
लेव मामा ने शपथ ली थी
कि वह नहीं कटेगा।

किलीना
लेव मामा तो गुज़र गए हैं,
शपथ से अब क्या लेना-देना है?
तुम ने या मैं ने तो नहीं शपथ ली, है न?
आवश्यकता पड़े तो पूरा वन
मैं बेचने के लिए तैयार हूँ,
या फिर कटवाकर खेत बनाने के लिए

बाकी लोगों के जैसा -
पिशाचियों के इस झुरमुट में क्या है?
यहाँ संध्या ढले तो बाहर निकलने से डर लगता है!
इस वन से अपनी कौनसी है भलाई?
भटक रहे हैं इस में भेड़ियों की भांति,
फिर सच में भेड़ियों के जैसे
हुआँ-हुआँ करेंगे किसी दिन!

लूकाश

चुप! चुप! मत बोलो! चुप रहो!
(उसके स्वर में अत्यंत आतंक सुनाई दे रहा है)
तुम कह रही हो वन कटवाकर
बेच दें... नहीं फिर होगा वह...
जो बोली हो अभी...?

किलीना

क्या? कि भेड़ियों...

लूकाश

(हाथ से उसका मुंह बंद करता है)
नहीं, मत बोलो!

किलीना

(उसका हाथ हटाकर)
भगवान के लिए छोड़ो यह!
तुम पागल हो गए या पीकर आए हो,
या फिर नज़र किसी की लग गई है?

जाओ घर में ज़रा।

लूकाश

अभी चलता हूँ...

बस... पी जाऊँ थोड़ा पानी...

(घुटनों के बल खड़े होकर बाल्टी में से पी लेता है। उठकर गहरी सोच में पड़े और एक जगह टिके अपने सामने देख रहा है)

किलीना

फिर? क्या सोच रहे हो?

लूकाश

मैं? ऐसे ही... पता नहीं...

(हिचहिचाते हुए)

मेरे यहाँ नहीं रहते कोई आया था क्या?

किलीना

(सख़्ती से)

किस को यहाँ था आना?

लूकाश

(आँखें नीचे करके)

पता नहीं...

किलीना

(द्वेशपूर्वक मुस्कुराकर)

तुम्हें पता नहीं तो संभव मुझको कुछ पता हो।

लूकाश

(घबराकर)
तुम्हें?

किलीना
नहीं तो क्या!
मैं जानती हूँ किसकी प्रतीक्षा है तुम्हें,
मगर बेकार है -
तुम्हारी आशा पर तरस आता है!
कुछ आया हो तो अब तक
धरती में लगकर हो गया है स्तंभ...

लूकाश
क्या बोल रही हो?

किलीना
जो सुन रहे हो।

माँ
(मकान में से दौड़ी आती है और गले लगाने लूकाश पर झपट पड़ती है। वह उसकी प्रसन्नता की शीतल प्रतिक्रिया दिखाता है)
बेटे! हे बेटे! कितना झेला है मैं ने
इस डाइन के साथ!

लूकाश
(कांप जाकर)
कौनसी?

माँ

(किलीना की ओर संकेत करते हुए)
इसी के साथ!

लूकाश
(उपेक्षापूर्वक मुस्कुराकर)
अब यह भी डाइन है?
यह होगा आपका भाग्य -
डाइन की सास बनकर रहना।
अब किसकी भूल है?
आप ने यही तो चाहा था।

माँ
मुझे कहाँ पता था
कि यह इतनी बेकार है और नालायक!

किलीना *(चिढ़कर)*
अरी! यह कौन कह रही है!
तुम से बड़ी चुड़ैल तथा नालायक
मिलेगी और कहाँ संसार में!
तुम्हारी यह जो माँ है न लूकाश,
यह लोहे को भी दांतों से पीस देगी!

लूकाश
और तुम, जहाँ तक मैं समझा हूँ,
लोहे से दृढ़ हो।

किलीना

यह मेरी आशा व्यर्थ ही थी कि तुम रक्षा करोगे मेरी!
बिल्कुल तुम अपनी माँ के जैसे हो!

माँ

(लूकाश से)
इसे तुम चुप कराओगे नहीं?
तुम से सुना यह कैसे जा सकता है?
मैं इसकी नौकरानी थोड़े ही हूँ!

लूकाश

मुझे रहने दो दोनों तुम!
क्या चाहती हो कि मैं न केवल घर से
किंतु संसार से भी हो जाऊँ दूर?
ऐसा ही होगा फिर!

किलीना

(माँ से)
अब तुम प्रसन्न हो ना?

माँ

तुम्हारा अपना बेटा तुम को
इतनी ही प्रसन्नता दे किसी दिन!

(क्रोध में मकान में चली जाती है, ड्योढ़ी पर घर के अंदर से मुरली लिए आते हुए किलीना के बच्चे से टकराती है)

हट, ज्लीद्नि के पट्ठे!

(लड़के को धक्का देकर और घर में घुसकर धड़ाम से किवाड़ मारती है)

बच्चा

बापू, आप आ गए हैं?

लूकाश

आ गया हूँ बेटे।

("बेटे" शब्द पर व्यंग्यपूर्वक बल देता है)

किलीना

(चौंककर)

तो फिर बताओ इसको क्या तुम्हें पुकारे -

"मामा" नहीं पुकार सकता है न?

लूकाश

(थोड़ा शर्माकर)

नहीं, वह मैं ने ऐसे ही कहा है...

आ जाओ छोटू, डरो मत, आ जाओ।

(लड़के के सुनहरे बालोंवाले सिर पर हाथ फेरता है)

तुम ने बनाई यह मुरली?

बच्चा

हाँ, मैं ने, पर बजाना नहीं आता।

बजाकर यदि आप दिखाएँ...

(लूकाश को मुरली बढ़ाता है)

लूकाश

हे बेटे, मेरा मुरली बजाना बीत चुका है।

(दुखद सोच में पड़ जाता है)

बच्चा

(पिनपिनाते हुए)

आप नहीं दिखाना चाहते!

माँ, बापू क्यों नहीं मुरली बजाना चाहते?

किलीना

रहने दो उनको! मुरली बजने से क्या मतलब!

लूकाश

दे दो ज़रा मुरली।

(मुरली लेता है)

अच्छी है। नम्रा से है बनाई न?

बच्चा

हाँ, उसवाली से।

(उस नम्रा की ओर संकेत करता है जिसका रूप मावका ने धारण किया है)

लूकाश

पहले यहाँ नहीं दिखी थी मुझको।

(किलीना से)

तुम ने लगाई?

किलीना

कौन लगाता ऐसे?

नम्रा का एक डंडा अटका था फिर उगने लगा।

यहाँ तो ऐसे ही सब कुछ उगता है,

इतनी वर्षा हुई!

बच्चा

(ज़िद करते हुए)

आप क्यों नहीं बजा रहे हैं?

लूकाश

(सोच में)

बजाऊँ?..

(बजाने लगता है [राग 14] पहले धीमे से, फिर स्वर बढ़ाकर थोड़ी देर में वह वसंती धुन सुनाने लगता है [राग 8] जो कभी मावका के लिए सुनाया था। मुरली का स्वर[राग 8 के दोबारा बजने के साथ] शब्दों से बोलने लगता है)

"कितना मीठा बज रहा है,
कितना गहरा चुभ रहा है,
मेरा सीना काटकर दिल निकाल रहा है..."

लूकाश

(मुरली हाथों से गिराते हुए)

ओह! यह क्या मुरली है?
जादू! जादू!

उसकी चीख से डरकर बच्चा घर के अंदर भाग गया।

यह कौनसी नम्रा है जादूगरनी, बोलो?

(किलीना की बाह पकड़ता है)

किलीना

छोड़ दो, मुझे कहाँ पता है?
तुम्हारे वंश की भांति वन की जनता से
मेरा कोई संबंध नहीं है!
काट दो इसे यदि इच्छा है,

मना मैं थोड़ी कर रही हूँ!
यह लो कुल्हाड़ी।
(ड्योढ़ी से उसको कुल्हाड़ी ला देती है)

लूकाश

(कुल्हाड़ी लेकर नम्रा के पास आया, एक बार तने पर मारा, वह हिल गई और सूखे पत्तों से सरसराई। उस ने फिर कुल्हाड़ी उठाई - फिर हाथ नीचे उतर गए)

नहीं मैं कर सकता, नहीं उठते हैं हाथ...
दिल थम गया, पता नहीं क्यों...

किलीना

मैं काटती हूँ!

(लूकाश से कुल्हाड़ी छीनकर उसको बल से घुमाती है नम्रा पर मारने के लिए)

उसी क्षण आकाश से पेरेलेस्निक अग्निमय उल्के का रूप धारण करके नीचे उड़ आता है तथा नम्रा से लिपट जाता है।

पेरेलेस्निक

मैं मुक्त कर देता हूँ तुम्हें प्रियतमा!

नम्रा अचानक जल उठती है। ऊपर की टहनियों तक पहुंचकर आग मकान पर आ जाती है, घास की छत जलने लगती है फिर शीघ्र ही पूरे मकान को आग लग जाती है। लूकाश की माँ और किलीना के बच्चे "आग! आग! बचाओ!" चिल्लाते हुए बाहर दौड़े आते हैं। माँ और किलीना आग से कुछ वस्तुएँ बचाने के प्रयत्न में लगी इधर-उधर दौड़ रही है और थैलों व बोरों के साथ उन पर चढ़े ज़्लीद्नि को भी बाहर लाती हैं जो फिर उन्हीं बोरों में छुप जाते हैं। बच्चे छोटी बाल्टियाँ लेकर और उन में पानी भरकर आग पर डालते हैं पर वह और बढ़ती जा रही है।

माँ

(लूकाश से)
खड़े क्यों हो? बचाओ अपना धन!

लूकाश

(मकान की ऊपरवाली कड़ी को घूरते हुए जो मानो फूलों से घुंघराली आग से लिपटी है)

धन? उसी के साथ तो निर्धनता भी जल सकती है।

कड़ी के कड़क के साथ गिर जाने से चिंगारियाँ स्तंभ की भांति ऊपर उठ जाती हैं, छत टूट जाती है और पूरा मकान एक अलाव बन जाता है। एक भारी सफ़ेद बादल आता है और बर्फ़ गिरने लगती है। शीघ्र ही पड़ती बर्फ़ के सफ़ेद परदे के पीछे कुछ भी दिखाई देना बंद हो जाता है, केवल हिलते हुए एक लाल दाग से पता चलता है कि कुछ जल रहा है। थोड़ी देर में लाल दाग बुझ जाता है, बर्फ़ का गिरना अघन हो जाता है और काली अग्निधानी दिखने लगती है जो धुंधुआते हुए नमी के कारण छन-छन कर रही है। लूकाश की माँ, किलीना के बच्चे तथा बचे हुए धन के थैले अब गए हुए हैं। एक आधा जला रथ दिख रहा है जिस में कृषि का कुछ सामान भरा है।

किलीना

(हाथ में अंतिम थैला पकड़े लूकाश की बाह खींचती है)

लूकाश!.. क्या हो गया तुम्हें? खड़े हो बनकर स्तंभ!
सामान ले जाने में मेरी सहायता तो कर सकते हो!

लूकाश

दरिद्रता के सारे भूत ले जा चुकी हो तुम।

किलीना

बेहतर होता कि चुप रहते! क्या बोल रहे हो?

लूकाश *(धीमी तथा विचित्र हँसी के साथ)*
हे महिला, मुझे अब वह दिखता है
जो तुम्हें नहीं दिखता... मैं बुद्धिमान हूँ अब...

किलीना
अरे मेरे पति, क्यों ऐसा बोल रहे हो...
डर लग रहा है...

लूकाश
डर? जब मूर्ख था तब नहीं डरती थी
और बुद्धिमान से डर गई?

किलीना
प्यारे लूकाश, चलो, चलते हैं गाँव!

लूकाश
नहीं चलता मैं। जाऊंगा नहीं वन से।
मैं वन में ही रहूंगा।

किलीना
क्या करोगे इधर?

लूकाश
हमेशा कुछ करते रहना आवश्यक है?

किलीना
फिर जिएँ कैसे?

लूकाश

जीना भी आवश्यक है क्या?

किलीना

पति, आ जाओ होश में,
मस्तिष्क तुम्हारा खो गया है क्या?
वह शायद डर के मारे। गाँव चलते हैं,
मैं वैध्य को बुलाऊंगी
उतार देगी वह भय! *(उसका हाथ खींचती है)*

लूकाश

(उसको उपेक्षापूर्ण मुस्कान के साथ देखता है)
फिर कौन देखेगा यहाँ बचा हुआ सामान?
(भरे रथ की ओर संकेत करता है)

किलीना

(स्वामिनी के भाव से)
हाँ, सच है, चोर भी आ सकते हैं!
गाँववालों को पता चल जाए
कि आग लगी थी - आ जाएंगे तुरंत!
फिर इधर ही खड़े रहना लूकाश।
मैं जाकर घोड़े मांगती हूँ किसी से -
हमारे सब तो जल गए घुड़साल में!
ले जाएंगे फिर पूरा रथ भरके
किन्ही संबंधियों के पास -
वे, संभव, रख सकते हैं हम को...
सर्वनाश! बचना है किसी ढंग...

अंतिम बात वह कहती है वन की ओर भागते हुए। लूकाश धीमी हँसी से उसको विदा करता है। किलीना फिर दृष्टि-क्षेत्र से लुप्त हो जाती है।

वन की ओर से पुराने काल में जैसी धरती तक लंबी सफ़ेद कमीज़ पहनी लंबे कद की कोई महिला सी आकृति आ रही है। वह मानो हवा से हिलती हुई आ रही है, कभी-कभी रुककर नीचे झुकती मानो कुछ ढूँढ रही हो। जब वह निकट आकर अग्निधानी के पास उगे हुए काली बेरियों के झाड़ों के पास रुककर सीधी हो जाती है तो उसका थका हुआ चेहरा दिखता है जो लूकाश के रूप से मिलता-जुलता है।

लूकाश

तुम कौन हो? यहाँ क्या कर रही हो?

आकृति

मैं खोया हुआ भाग्य हूँ[8]।
ले आई मुझको इन झाड़ों में
मनमानी आंधी सी।
अब वन में भटकती हूँ अंधेरे के प्रकार,
झुक-झुक कर ढूँढती हूँ
बीती हुई जन्नत की राह,
पर उस राह पर श्वेत बरफ़ गिर पड़ी है...
संभव, इन झाड़ों में
हमेशा के लिए अब खो गई हूँ मैं!..

लूकाश

हे भाग्य, तुम इन झाड़ों से

---

[8] युक्रैनी भाषा में "भाग्य" शब्द स्त्रीलिंग का है, इसलिए यहाँ भाग्य स्त्री के रूप में आती है.

एक डंडी तोड़कर और झाड़ू की भांति
कर उसका प्रयोग
अपने लिए बर्फ़ में एक छोटा सा रास्ता
बना तो सकती हो?

भाग्य
इस वन में वसंत में भी आई थी मैं,
हर राह पर लगाए थे जादू के फूल।
तुम पैरों से बिना हिचके
कुचल गए उन को...
अब खर-पतवार ही उगे हैं आस-पास में,
मिल जाएगा किधर वह रास्ता?

लूकाश
हे भाग्य, तुम हाथों को बर्फ़ में डुबोकर देख लो,
बचा कोई जादू का फूल तो मिल जाए।

भाग्य
मेरे हाथ अब ठंडे पड़ गए हैं,
एक उंगली भी नहीं हिल सकती...
यह देखकर और सुनकर बस रो ही सकती हूँ
कि निश्चित है मेरा मरना।
(कराहकर चल पड़ती है)

लूकाश
(उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए)
पर बताओ मुझे, दो परामर्श -

बिना भाग्य के मैं जिऊँ कैसे?

भाग्य

(लूकाश के पैरों के नीचे धरती की ओर संकेत करते हुए)

धरती पर पड़ी काटी
पेड़ की टहनी जैसे!

(हिलते हुए चली जाती है और बर्फ़ के परदे के पीछे अदृश्य हो जाती है)

लूकाश भाग्य के दिखाए स्थान को झुककर देखता है और वहाँ उसको उसी की फेंकी हुई वह नम्मा की मुरली दिख जाती है, वह उसको हाथों में ले लेता है और सफ़ेद पड़े मैदान से गुज़रकर बर्च के पेड़ के पास आता है। बर्फ़ से श्वेत बनी लंबी टहनियों के नीचे बैठकर मुरली को हाथों में घुमाने लगता है, कभी-कभी बच्चे की भांति मुस्कुराते हुए। एक हल्की, श्वेत, पारदर्शी आकृति जो चेहरे में मावका से मिलती है, बर्च के पीछे से निकलकर लूकाश के ऊपर झुक जाती है।

मावका की आकृति

मुरली बजाकर स्वर दिलाओ मेरे हृदय को!
यही तो बस बचा है मेरा।

लूकाश

तुम हो?.. तुम आ गई बनकर पिशाच
रक्त मेरा पीने के लिए? यह लो! पी जाओ!
(अपना सीना खोलता है)
जीवित रहो तुम मेरे रक्त से!
ऐसा ही होना चाहिए क्योंकि
मैं ने तुम्हें नष्ट कर दिया है...

मावका

नहीं प्रियतम,

तुमने मुझे दिलाई आत्मा,
जिस प्रकार नम्रा की टहनी को
तीव्र चाकू स्वर दिलाता है।

लूकाश
मैं ने तुम्हें दिलाई आत्मा?
किंतु शरीर से वंचित कर दिया है!
अब क्या बची हो? छाया! भूत!

मावका
अरे छोड़ो तुम चिंता शरीर की!
वह उज्जवल ज्योति से चमक उठा है
शुद्ध व गरम अच्छे अंगूर के पानी जैसा,
स्वतंत्र चिंगारियों की भांति ऊपर उड़ उठा है।
हल्की व नरम उसकी राख
अपनी धरती पर लौट पड़ेगी,
जल के सहारे से नम्रा को उगा देगी -
एक आरंभ बनेगा तब यह मेरा अंत।
लोग आते रहेंगे यहाँ फिर,
धनी व दरिद्र, हँसमुख व उदास,
बांटेंगे मुझ से अपने सुख व दुख,
उन से यह आत्मा मेरी बात करेगी,
उन से तब बोलूंगी मैं
नम्रा की टहनी के सरसर से,
भावुक मुरली के इस स्नेह-भरे स्वर से,
टहनियों से टपकी करुणा-भरी ओस से।

गाऊंगी भी तब मैं उन के लिए
तुम से सुने हुए गीत
जो गाए थे तुम ने बजाकर मुरली
मेरे लिए, जब खिला था वसंत,
सपनों से भरा लग रहा था जब वन...
यही अब है प्रार्थना : बजाओ मुरली, प्रियतम!

लूकाश मुरली बजाना शुरू करता है। आरभ में [राग 15 व 16] उसका संगीत शिशिर के पवन की भांति दुखदायी है मानो किसी खोई तथा विस्मरणीय वस्तु पर पछतावा, किंतु जल्द ही प्रेम का विजयी गीत [राग 10 मगर अंक 1 की तुलना में इसका स्वर अधिक ऊंचा तथा भावपूर्ण है] दुख को ढांक लेता है। संगीत के बदलने के साथ-साथ चारों ओर फैले शिशिर का दृश्य भी बदल रहा है। बर्च घुंघराले पत्तों से सरसराने लगती है, खुले हुए उपवन में वसंत के स्वर आते हैं, शिशिर के अंधेरे दिन का स्थान रोशन, चंद्रमा भरी रात लेती है। मावका सितारों का सेहरा पहनी हुई अचानक अपनी पुरानी सुंदरता से झलक उठती है। सुख की चीख के साथ लूकाश उसकी ओर लपक जाता है। पवन पेड़ों से सफ़ेद फूल उड़ा लेता है। ये फूल उड़कर प्रेमियों के जोड़े को ढांक लेते हैं, फिर बर्फ़ की आंधी में बदल जाते हैं। जब वह थोड़ी शांत हो गई तो फिर शिशिर का दृश्य दिखाई देता है, पेड़ों की टहनियों पर बर्फ़ का भारी बोझ लादा हुआ है। लूकाश पीठ के बल बर्च से लगा अकेला बैठा है, हाथों में मुरली, आँखें बंद, मुंह पर सुख की मुस्कान जमी है। वह बिना हिले बैठा है। बर्फ़ टोपी की भांति उसके सिर पर लगी है, उसकी सारी आकृति को ढांक चुकी है, तथा गिरती जा रही है, गिरती जा रही है...

“वन-गीत” के लिए लेस्या उक्राईंका के द्वारा चुने गए वोलीन के लोक-संगीत के राग :

ध्यान दें। ये सारे राग सोलो में बजने चाहिए, आर्केस्ट्रा या किसी नक्ली अनुकूलन के बिना। यदि यहाँ दिए क्रम में लम्बे व नक्ली मॉडुलन के बिना एक राग से दूसरे पर आना कठिन लगे तो उन के बीच में बस विराम लगाए जाएँ जैसा गाँव के बैंडों की शैली में होता है क्योंकि गाँव की सहज शैली यहाँ रखनी ही होगी। बस यदि उस संगीत-यंत्र के लिए जो मुरली की आवाज़ देगी किसी राग का सुर कठिन लगे तो संगीतकार उस को स्वयं ऊपर-नीचे कर सकता है बेहतर आवाज़ निकलने और एक राग से दूसरे पर आसानी से आने की दृष्टि से।

लेस्या उक्राईंका

इन रागों की स्वर लिपि नीचे दिये लिंक पर उपलब्ध है -

http://lesya.artiweb.org.ua/works/dramas/lp-add.html

Літературно-художнє видання

ЛЕСЯ УКРАЇНКА

ЛІСОВА ПІСНЯ

Переклад з української
(мовою гінді)

Редактор: Анаміка Бгарті;
Перекладач: Юрій Ботвінкін;
Художник: Ізабелла Стасюк.

За підтримки посольства республіки Індія в Україні.